A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 16 जून, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 279 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

फादर्स डे
पिता का होना

फोटोः बंसीलाल परमार

सुप्रभात

दृश्य में टांकती हूँ
सुविधानुसार कुछ आवश्यक उपस्थितियाँ
जो फ़िलहाल अनुपस्थित हैं

बुरक देती हूँ
संवेदना, सम्मोहन, सामीप्य
नमक को स्वादानुसार ही होना होता है

कतरती रहती हूँ
सभी चुभती अतिरिक्तताएँ
अनावश्यक माने गए हर सिरे को धर
उड़ा देती हूँ फूंक मारकर

कुछ संतुष्टियों के पीछे-पीछे चलती
एक नया भूगोल जीवन का रचने लगी हूँ

संवारती हूँ इसी तरह दृश्य को अक्सर
अक्सर समक्ष से पलायन कर जाती हूँ।
– अपर्णा अनेकवर्णा

सुनीता केजरीवाल सोशल मीडिया से सुनवाई के वीडियो हटाएं

- बोला हाईकोर्ट, मेटा-यूट्यूब को भी वीडियो डिलीट करने का आदेश, कहा-ये नियमों के खिलाफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने शनिवार, 15 जून को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल को कोर्ट के वीडियो सोशल मीडिया से हटाने के आदेश दिए। कोर्ट ने सुनीता, सोशल मीडिया कंपनियां एक्स, मेटा और यूट्यूब समेत 5 को नोटिस जारी कर जवाब मांगा। अगली सुनवाई 9 जुलाई को होगी। यह वीडियो तब का है जब शराब नीति केस में केजरीवाल को अरेस्ट किया गया था और उन्होंने कोर्ट के सामने खुद अपना पक्ष रखा था। हाईकोर्ट ने सोशल मीडिया कंपनियों से कहा, जिन लोगों ने इन वीडियो को रीपोस्ट किया है उसे भी डिलीट किया जाए। जस्टिस नीना बंसल कृष्णा और अमित शर्मा की बेंच ने कहा कि ये वीडियो हाईकोर्ट के वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के नियमों के खिलाफ है। याचिका वकील वैभव सिंह ने लगाई थी। याचिका में सिंह ने कहा था,अरविंद केजरीवाल को शराब नीति केस में 21 मार्च को गिरफ्तार किया गया था।

स्विट्जरलैंड के यूक्रेन पीस समिट में शामिल होगा भारत

तारों के जाल से होगी वेन्यू की सुरक्षा,सम्मेलन में हिस्सा नहीं लेंगे रूस, चीन, सऊदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। रूस और यूक्रेन के बीच 840 दिनों से जारी जंग के बीच आज स्विट्जरलैंड के बर्जनस्टॉक रिजॉर्ट में पीस समिट की शुरुआत होगी। 2 दिन तक चलने वाला यह शिखर सम्मेलन जंग रोकने के लिए अब तक का चौथा समिट होगा। इससे पहले कोपेनहेगन, जेद्दा और माल्टा में तीन समिट हो चुकी हैं। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, स्विस अधिकारियों ने सम्मेलन के लिए 160 देशों को न्योता दिया था, जिनमें से भारत समेत करीब 90 देशों के लीडर्स या प्रतिनिधि इसमें हिस्सा लेंगे। हालांकि, कई बड़े देशों ने इसमें शामिल होने से इनकार कर दिया था। वहीं रूस को इस समिट के लिए आमंत्रण नहीं भेजा गया है। रूस के अहम सहयोगी चीन ने भी इस समिट से दूर रहने का फैसला किया है। जी 20 के मौजूदा अध्यक्ष ब्राजील ने भी ऐसा ही किया है। वहीं सऊदी अरब और पाकिस्तान भी समिट में हिस्सा नहीं लेंगे। यूक्रेन के सबसे बड़े समर्थक अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन भी इस समिट में शामिल नहीं होंगे।

हालांकि, उनकी जगह उपराष्ट्रपति कमला हैरिस मौजूद होंगी। स्विट्जरलैंड में जुट रहे वर्ल्ड लीडर्स की सुरक्षा के लिए 4 हजार सैनिकों को तैनात किया गया है। इसके अलावा वेन्यू के करीब स्टील की एक रिंग रखी गई है। इसके आसपास के 6.5 किलोमीटर के इलाके में फेंसिंग की गई है। यहां 8 किलोमीटर लंबे तारों का जाल भी बिछाया गया है। स्विट्जरलैंड की मिलिट्री को इलाके में सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई है। उनकी एयरफोर्स लगातार क्षेत्र में निगरानी कर रही है। वेन्यू के पास बनाए गए हेलीपोर्ट की सुरक्षा के लिए 5 मिलिट्री हेलीकॉप्टर्स तैनात हैं।

गृहमंत्री अमित शाह ने की जम्मू कश्मीर के हालात की समीक्षा

- आज बुलाई हाई लेवल मीटिंग, डोभाल समेत कई अधिकारी होंगे शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तीर्थयात्रियों को ले जा रही बस पर हमले समेत हाल में हुई कई आतंकवादी घटनाओं के मद्देनजर शुक्रवार को जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की। सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। शाह ने 16 जून को एक उच्चस्तरीय सुरक्षा बैठक भी बुलाई है, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, सेना और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के शीर्ष अधिकारियों समेत अन्य लोग शामिल होंगे। सूत्रों ने कहा कि गृह मंत्री ने रविवार की बैठक में भी सालाना अमरनाथ यात्रा की तैयारियों का जायजा लिया था जो 29 जून से शुरू हो रही है। उस बैठक में गृह मंत्री को जम्मू-कश्मीर के हालात और वहां आतंकवादी घटनाओं के बाद उठाए गए कदमों से अवगत कराया गया।आतंकवादियों ने पिछले चार दिनों में रियासी, कठुआ और डोडा जिलों के चार स्थानों पर हमला किया है, जिसमें नौ तीर्थयात्रियों के अलावा एक सीआरपीएफ जवान की मौत हो गई, जबकि सात सुरक्षाकर्मियों समेत अन्य लोग घायल हो गए। कठुआ जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में दो संदिग्ध पाकिस्तानी आतंकवादी भी मारे गए।

अलकनंदा नदी में गिरी ट्रैवलर, 12 लोगों की मौत

- **उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में भीषण हादसा,तलाश जारी**
- **23 पर्यटक सवार थे,घायलों को एयरलिफ्ट किया गया**

रुद्रप्रयाग (एजेंसी)। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में भीषण हादसा हुआ है। यात्रियों से भरी टेंपो ट्रैवलर बद्रीनाथ हाईवे पर गहरी खाई में गिर गई। इस दुर्घटना के समय वाहन में 23 यात्रियों के सवार होने की खबर सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दुर्घटना में 12 लोगों के मौत हो गई है। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर एसडीआरएफ की टीम पहुंची। पुलिस और प्रशासन की टीम भी लगातार राहत और बचाव कार्य में लगी हुई है। एसडीआरएफ की ओर से जानकारी दी गई है। घटना में अब तक दो घायलों को निकाला गया है। बचाव दल ने बताया कि रुद्रप्रयाग में बद्रीनाथ हाईवे के पास एक टेम्पो ट्रैवलर गहरी खाई में गिर गया। एसडीआरएफ और पुलिस की टीम बचाव कार्य कर रही है। अब तक दो घायलों को टीम ने एंबुलेंस के जरिए अस्पताल पहुंचाया गया है। मिल रही जानकारी के मुताबिक, रुद्रप्रयाग में बद्रीनाथ हाईवे पर हुए एक्सीडेंट में वाहन अलकनंदा नदी में गिर गया। अलकनंदा नदी के किनारे वाहन क्षतिग्रस्त अवस्था में पाया गया है। इस हादसे को लेकर कई प्रकार की बातें सामने आ रही हैं। दावा किया जा रहा है कि अलकनंदा में गिरने के कारण टेंपो ट्रैवलर से स्थानीय लोगों को भी नुकसान पहुंचा है। इसके अलावा दुर्घटना की क्षति को लेकर तरह-तरह के दावे किए जा रहे हैं। अभी प्रशासनिक पुष्टि का इंतजार किया जा रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार, दुर्घटना भीषण थी।

उज्जैन में मां शिप्रा शुद्धिकरण का संकल्प ले रहा है मूर्तरूप : मुख्यमंत्री डॉ.यादव

600 करोड़ की लागत से बनेगा सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी डेम,मां शिप्रा का जल शिप्रा में ही रहेगा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आज हमारे कई वर्षों का संकल्प मूर्तरूप लेने जा रहा है। हमने सभी सन्तों के साथ यह संकल्प लिया था कि शिप्रा नदी के जल को निर्मल और स्वच्छ बनायेंगे और कान्ह नदी का पानी शिप्रा में मिलने से रोकेंगे। कान्ह क्लोज डक्ट परियोजना के माध्यम से अब कान्ह का दूषित जल मां शिप्रा के किसी भी तट पर नहीं मिलेगा। कान्ह का पानी गंभीर नदी के निचले किनारे तक पहुंचाया जायेगा, जिसे भी शुद्धिकरण किया जायेगा और आसपास के किसानों को सिंचाई के लिये पानी मिलेगा। 600 करोड़ रुपये की लागत से आने वाले समय में सेवरखेड़ी में बैराज निर्मित कर शिप्रा का पानी लिफ्ट कर सिलारखेड़ी ले जाया जाएगा और वहां से पुनः शिप्रा में छोड़ा जाएगा। इससे शिप्रा का पानी शिप्रा में ही रहेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज उज्जैन के ग्राम डेंडिया स्थित शनि मन्दिर के पास आयोजित 817 करोड़ की लागत से कान्ह क्लोज डक्ट परियोजना एवं अन्य भूमिपूजन एवं लोकार्पण कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में लगभग 598.66 करोड़ की लागत से बनने वाली कान्ह क्लोज डक्ट परियोजना का भूमिपूजन किया। इसके अतिरिक्त लगभग 217 करोड़ के निर्माण कार्यों का भूमिपूजन एवं लोकार्पण किया।

उज्जैन-जावरा मार्ग फोरलेन बनेगा- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 5 हजार करोड़ की लागत से उज्जैन-जावरा फोरलेन व्हाया नागदा का शीघ्र निर्माण पूरा होगा। वहीं उज्जैन-इन्दौर सिक्सलेन का शीघ्र भूमिपूजन किया जायेगा। विकास का यह क्रम सन्त समाजजनों के सहयोग से निरन्तर जारी रहेगा। विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि 16 जून को पीएमश्री धार्मिक पर्यटन हेली सेवा का शुभारंभ किया जाएगा, जिसके माध्यम से श्रद्धालु कम समय में महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर जैसे तीर्थ स्थानों पर पहुंच सकेंगे। वहीं उज्जैन से पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा के माध्यम से यात्री उज्जैन, भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर, रीवा, इन्दौर, सिंगरोली, खजुराहो की हवाई सेवा का लाभ भी ले सकेंगे।

आयुष्मान कार्ड धारियों के लिए निःशुल्क एयर एंबुलेंस सेवा- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन में निरन्तर विकास के कार्य चल रहे हैं तथा यहां के निवासियों को नित्य कई सौगातें मिल रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी पात्रता धारी अपना आयुष्मान कार्ड अवश्य बनवायें, जिससे उन्हें 5 लाख रुपये तक की निःशुल्क उपचार का लाभ प्राप्त हो सके।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 41.9 °c
न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 16 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब आपके मोबाइल पर हर कॉलर का नाम दिखेगा

टेलीकॉम-कंपनियों ने कॉलर आईडी डिस्प्ले सर्विस शुरू की, मुंबई-हरियाणा में ट्रॉयल

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब फोन पर अनजान नंबर से कॉल आने पर कॉलर का नाम भी दिखाई देगा। एक अंग्रेजी अखबार की रिपोर्ट के अनुसार टेलीकॉम कंपनियों ने मुंबई और हरियाणा सर्किल में ट्रायल शुरू कर दिया है। आने वाले समय में अन्य शहरों में भी ये सर्विस शुरू करने की योजना है। कॉलिंग नेम प्रेजेंटेशन को स्पैम और फ्रॉड कॉल को रोकने के तरीके के रूप में देखा जा रहा है, जिसमें हाल के दिनों में बढ़ोतरी देखी गई है। सरकार और टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया के दबाव के बाद कंपनियों ने यह टेस्टिंग शुरू की है। टेलीकॉम कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि यह

कैसे काम कर रहा है, इसका रिजल्ट जानने के लिए हम सीमित संख्या में इसकी टेस्टिंग कर रहे हैं। इसमें आने वाली कॉल के दौरान नंबर के साथ कॉल करने वाले का नाम भी दिखाई देगा। हम टेस्टिंग के रिजल्ट को डिपार्टमेंट ऑफ टेलीकम्युनिकेशन के साथ शेयर करेंगे, ताकि प्रस्तावित सर्विस के बारे में एक व्यावहारिक निर्णय लिया जा सके। ट्रूकॉलर इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर ऋषित झुनझुनवाला ने मनी कंट्रोल से बात करते हुए कहा कि सर्विस कंपनी की मौजूदा कॉलर आईडी एप्लिकेशन की तरह ही होगी, लेकिन इससे उनके बिजनेस पर कोई भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

सीएम नीतिश कुमार की अचानक हुई तबीयत खराब

मेदांता अस्पताल में कराया गया भर्ती, हाथों में तेज दर्द की शिकायत

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार की अचानक तबीयत खराब होने की खबर है। उनको मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शनिवार सुबह नीतिश के हाथ में तेज दर्द की शिकायत मिली थी। पटना स्थित मेदांता हॉस्पिटल में नीतिश कुमार की देखरेख कर रही हड्डी रोग विभाग की टीम कर रही है। नीतिश बीते कई महीनों से चुनाव प्रचार समेत कई कामों में व्यस्त थे। इस दौरान उन्होंने कई बार दिल्ली का दौरा किया तो वहीं प्रदेश के विभिन्न जिलों में लगातार दौरा किया। सरकार गठन के लिए नीतिश को एनडीए की बैठकों में भी शामिल होने के लिए जाना रहा।

संक्षिप्त समाचार

ईडी ने खनन माफिया हाजी इकबाल पर कसा शिकंजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के खनन माफिया और पूर्व विधायक हाजी इकबाल पर (प्रवर्तन निदेशालय) ईडी ने शिकंजा कस दिया है। लंबे समय से फरार चल रहे हाजी इकबाल पर अवैध खनन से लेकर कई मामले दर्ज हैं। जानकारी के अनुसार हाजी दुबई में है। जिस पर कार्रवाई

करते हुए ईडी ने 4 हजार करोड़ से ज्यादा की संपत्ति जब्त की है। बीते कुछ सालों से यूपी की योगी सरकार माफियाओं को मिट्टी में मिलाने का काम कर रही है। इस कड़ी में सरकार ने कई माफियाओं को मिट्टी में भी मिलाया है। लेकिन इस बार कार्रवाई यूपी सरकार ने नहीं बल्कि ईडी की तरफ से की गई है।

जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बलों की चौकसी बढ़ी

अमरनाथ यात्रा

- पीएम का दौरा और विधानसभा चुनावों से पहले अलर्ट पर एजेंसियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर में हाल के आतंकी हमलों के बाद राज्य में सुरक्षा एजेंसिया कड़ी चौकसी बरत रही हैं। एजेंसियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती जल्दी ही शुरू होने जा रही अमरनाथ यात्रा को सकुशल पूरा कराना है। इसके अलावा वहां अगले कुछ महीनों में विधानसभा चुनाव भी होने वाले हैं। इसके साथ ही कुछ दिनों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राज्य के दौरे पर जाने की भी संभावना है।

सुरेश गोपी बोले

इंदिरा गांधी मदर ऑफ इंडिया

त्रिशूर (एजेंसी)। केरल के त्रिशूर से बीजेपी सांसद और केंद्रीय मंत्री सुरेश गोपी ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को मदर ऑफ इंडिया कहा। उन्होंने दिवंगत कांग्रेसी मुख्यमंत्री के करुणाकरण को भी साहसी मुख्यमंत्री बताया। गोपी ने कहा कि वह इंदिरा गांधी को भारत की मां मानते थे, इसलिए करुणाकरण उनके लिए राज्य में कांग्रेस पार्टी

के पिता थे। गोपी बुधवार 12 जून को पुन्कुन्नम में करुणाकरण के स्मारक मुरली मंदिरम गए थे। उन्होंने मीडिया से चर्चा के दौरान यह भी कहा कि उनके दौरे का कोई राजनीतिक अर्थ न निकाला जाए, क्योंकि वे अपने गुरु को श्रद्धांजलि देने आए हैं। गोपी केरल से भाजपा के पहले सांसद हैं। उन्होंने सीपीएम के सुनील कुमार को 75 हजार वोटों से हराया है।

आग उगल रहा सूरज...तपिश जारी

गर्मी ने तोड़े सारे रिकार्ड, नौतपा से भी बुरा हाल

- दिल्ली में 6 साल का रिकॉर्ड टूटा, यूपी- बिहार में हाल बेहाल
- भीषण गर्मी की चपेट में पूरा उत्तर भारत, रात में भी चल रही लू

नई दिल्ली (एजेंसी)। जून का एक पखवाड़ा बीत चुका है और गर्मी ने अभी भी हालत पस्त की हुई है। दिल्ली सहित देश के कई राज्य इस समय ज्वाला सा जल रहे हैं। दिन ही नहीं अब तो रात में भी लू चल रही है। हालांकि गाजियाबाद और बिहार के कुछेक इलाकों में छिटपुट बरसात तो हुई लेकिन वह भी नाकाफी है। लोगों को न घर में चैन मिल रहा है और न ही रात में। मॉनसून ने दस्तक तो दे दी है पर अभी उसे पूरी तरह छाने में भी समय लगेगा। अधिकतम तापमान 45 से 47 डिग्री तक जा रहा है। इस भयानक गर्मी के चपेट में सबसे ज्यादा दिल्ली है। यहां गर्मी कम होने का नाम ही नहीं ले रही है। सीजन में पहली बार लोगों को दिन के बाद अब रात में भी लू झेलनी पड़ी है। इस बार न्यूनतम तापमान तक 33 डिग्री पहुंच चुका है। हालांकि देर दोपहर

कुछ जगहों पर आंधी और बूंदाबांदी हुई लेकिन इसके बावजूद लू और गर्म हवाओं का दौर जारी रहा। मौसम विभाग ने 18 जून तक गर्मी और लू का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है।

अबकी पहाड़ी इलाके भी अछूते नहीं

हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड ठंडी जगहें माने जाते हैं। कई लोग गर्मी मिटाने के लिए इन इलाकों का चुनाव करते हैं, लेकिन इस गर्मी ने इन दो राज्यों को भी अपने चपेट में ले लिया है। दिन के समय उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में भी हीटवेव चल रही है।

मौसम विभाग की मानें तो अगले दो तीन दिन भी हीटवेव के साथ तापमान में बढ़ोतरी लोगों को परेशान कर सकती है। इस दौरान बारिश या हल्की बूंदाबांदी की भी संभावना नहीं है।

राजस्थान और यूपी का हाल भी ठीक नहीं

राजस्थान और उत्तर प्रदेश भी इस प्रचंड गर्मी से अछूते नहीं हैं। 20 जून तक यहां भी हीटवेव का येलो अलर्ट है। यही हाल यूपी और राजस्थान के पूर्वी और पश्चिमी इलाके में भी है। दिन में लू या कहें हीटवेव ने परेशान कर रखा है तो वहीं रात में भी गर्म हवाएं तापमान बढ़ाए हुए हैं।

छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के खिलाफ बड़ी स्ट्राइक

8 नक्सलियों को सुरक्षा बलों ने उतारा मौत के घाट

नई दिल्ली (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ होने की खबर आ रही है। इस मुठभेड़ में 8 नक्सलियों को मारे जाने की सूचना मिल रही है। वहीं इस मुठभेड़ में एक जवान के घायल होने की भी सूचना मिल रही है। अबूझमाड़ के नक्सलियों की राजधानी माने जाने वाले इलाके कुतुल, फरसबेड़ा, कोड़तामेटा के जंगलों में मुढभेड़ रही है। इस मुठभेड़ में 8 नक्सलियों के मारे जाने की खबर मिल रही है। वहीं सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कोंडागांव नारायणपुर, दंतेवाड़ा, कांकेर में सीआरपीएफ, डीआरजी (आत्मसमर्पण कर चुके नक्सलियों की टीम) और स्थानीय पुलिस बल की सहायता से कार्यवाही की जा रही है।

पिछले दो दिनों से इलाके में एंटी नक्सल ऑपरेशन लांच करके कार्यवाही की जा रही है। बीते दिनों छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने स्पष्ट कर दिया था कि छत्तीसगढ़ में नक्सली यदि गोली की भाषा ही समझते हैं तो सरकार उनको उनके ही भाषा में जवाब देगी। वहीं सरकार नक्सलियों के आत्मसमर्पण करके की बात पर भी तैयार है। जबकि छत्तीसगढ़ के डिप्टी सीएम ने बताया कि जल्दी ही छत्तीसगढ़ से माओवाद की काली छाया दूर होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने खुली जेल कॉलोनी भैरवगढ़ का लोकार्पण किया

सवा 3 करोड़ रु. से अधिक लागत की 20 बंदी क्षमता की होगी खुली जेल

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को उज्जैन में खुली जेल कॉलोनी भैरवगढ़ का लोकार्पण किया। मध्य प्रदेश शासन द्वारा बंदियों के पुनर्वास की दिशा में की गई इस पहल के तहत 20 बंदी क्षमता की खुली जेल का निर्माण किया गया है, जिसमें बंदी अपने परिवार सहित निवास कर सकेंगे। इस खुली जेल की निर्माण लागत 3 करोड़ 25 लाख 48 हजार रुपए है। खुली जेल में 20 दण्डित बंदी अपने परिवार के साथ रहकर अपने कौशल अनुरूप रोजगार प्राप्त कर समाज की मुख्य धारा से जुड़कर सामाजिक जीवन यापन कर सकेंगे। कार्यक्रम में सांसद श्री अनिल फिरोजिया, उज्जैन उत्तर विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, प्रदेश के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, प्रदेश के जेल डी.जी. श्री गोविंद प्रताप सिंह, संभागायुक्त श्री संजय गुप्ता और डीआईजी जेल श्री एम.आर. पटेल उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि नवनिर्मित उज्जैन भैरवगढ़ खुली जेल प्रदेश की आठवी खुली जेल है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की जेलों में कैदियों को संपूर्ण मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए शासन कृत संकल्पित है। भैरवगढ़ की इस खुली जेल कॉलोनी का नियोजित ढंग से निर्माण किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा इस दौरान नवनिर्मित खुली जेल कॉलोनी का निरीक्षण भी किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन में इंडियन कॉफी हाउस का शुभारंभ किया

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्वल्पाहार कर कहा कि उज्जैन को मिलेगा विभिन्न व्यंजनों का स्वाद

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार 15 जून को उज्जैन में पुलिस कंट्रोल रूम के समीप लगभग ढाई हजार स्क्वायर फीट क्षेत्र में बनाए गए इंडियन कॉफी हाउस रेस्टोरेंट का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने दीप प्रज्वलित करने के बाद वहां पर बैठकर स्वल्पाहार किया और भोजन के गुणवत्ता की सराहना की।

मुख्यमंत्री श्री यादव ने कहा कि इस इंडियन कॉफ़ी हाउस में पुलिस विभाग के लिए विशेष

30 प्रतिशत का डिस्काउंट प्रदान किया जाएगा। शुभारंभ के पश्चात आमजन के लिए यह प्रारंभ हो जाएगा। इंडियन कॉफी हाउस की पहली शाखा प्रदेश के जबलपुर में प्रारंभ की गई थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन की जनता एवं पुलिस प्रशासन कि सुविधा के लिए इंडियन कॉफी हाउस प्रारंभ हुआ है। इसके माध्यम से सभी को उच्च गुणवत्ता वाला भोजन मिलेगा। इसी के साथ इंडियन कॉफ़ी हाउस भारत कि विविधता को एकरूपता प्रदान करने वाले विभिन्न प्रकार के व्यंजन जनता को उपलब्ध करवाएगा। शुभारंभ के दौरान सांसद संत श्री उमेश नाथ महाराज, विधायक श्री महेंद्र कालूखेड़ा, संभागायुक्त श्री संजय गुप्ता, आईजी श्री संतोष कुमार सिंह, कलेक्टर श्री नीरज कुमार सिंह एवं अन्य जन-प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

भोपाल-ब्यावरा हाईवे पर एक्सीडेंट, दो की मौत

स्कॉर्पियो की टक्कर के बाद ट्रक से टकराई बाइक, दो महिला सहित चार घायल

सीहोर (नप्र)। भोपाल-ब्यावरा हाईवे पर शनिवार को एक स्कॉर्पियो ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद बाइक ट्रक से टकरा गई। इसमें बाइक सवार दो लोगों की मौके पर मौत हो गई। दो महिला सहित चार लोग घायल हो गए। घायलों को एंबुलेंस से श्यामपुर के अस्पताल ले जाया गया है। मामला घटना सुबह 8.15 से 8.40 के बीच का है।

घायल महिला और बच्चा बाइक पर सवार थे। बाइक सवार ब्यावरा की ओर से भोपाल जा रहे थे। रास्ते में बैरागढ़ खुमान के पास एनएच 46 पर मीना ढाबा रामदेव जी मंदिर के पास स्कॉर्पियो ने बाइक को टक्कर मार दी। बाइक पर बैठे युवक, दो बच्चे और महिला साइड में चल रहे ट्रक में जा घुसे। इसमें युवक और पांच साल की बच्ची की मौके पर मौत हो गई। एक बच्चा और महिला दूर जा गिरे। उन्हें गंभीर चोट आई है। मौके पर पहुंचे श्यामपुर पुलिस के कर्मियों ने बताया कि 5 साल की लड़की और 24-25 साल के युवक की मौत हो गई है।

दुर्घटना के बाद ग्रामीण मुकेश ,विशाल तत्काल मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि दुर्घटना के समय यहां से गुजर रहे एक वेगेनर कार सवार घायलों की मदद के लिए रुके।

11 घरों में 150 से ज्यादा गोवंश के अवशेष मिले

मंडला में 5 आरोपी के मकानों पर चला बुलडोजर; 6 घर और गिराए जा रहे

मंडला (नप्र)। मंडला के नैनपुर में 11 घरों से 150 से ज्यादा गोवंश के अवशेष मिले हैं। मामला भैंसवाही गांव का है। यहां पुलिस ने शुक्रवार देर रात दबिश दी। शनिवार को पुलिस और प्रशासन आरोपियों के अवैध निर्माण गिराने की कार्रवाई कर रहा है। अब तक 5 घरों को बुलडोजर चलाकर ढहा दिया गया। बाकी के 6 घर और गिराए जा रहे हैं।

गांव में एसपी रजत सकलेचा,एएसपी समेत भारी पुलिस बल तैनात है। आरोपियों के घरों से गोवंश की हड्?डी, चर्बी समेत अन्य अवशेष बरामद हुए थे। एक आरोपी वाहिद कुरैशी को गिरफ्तार कर लिया है। बाकी आरोपी रात में अंधेरे का फायदा उठाकर भाग निकले। पुलिस ने इस मामले में 11 एफआईआर दर्ज की हैं।

11 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज- प्रशासन आरोपियों के घरों पर बुलडोजर से ढहाने की कार्रवाई कर रहा है। नैनपुर थाना पुलिस ने इस मामले में 11 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की हैं। इनके पुराने रिकॉर्ड भी खंगाले जा रहे हैं। इनमें दो आरोपियों की क्रिमिनल हिस्ट्री मिली है। फिलहाल पुलिस गिरफ्तार आरोपी वाहिद कुरैशी से पूछताछ कर रही है। भैंसवाही गांव में 8 चौकियों का पुलिस बल तैनात है।

5 आरोपियों के मकान से ढहाए, और जेसीबी बुलाई- मंडला के भैंसवाही गांव में तीन जेसीबी से आरोपियों के घर ढहाए जा रहे हैं। अब तक 5 आरोपियों के मकान तोड़े जा चुके हैं। बाकी 6 मकानों को तोड़ने की कार्रवाई की जा रही है। प्रशासन से आसपास के गांवों से और जेसीबी बुलवाई है।

आरोपियों ने सरकारी जमीन पर किया कब्जा- मंडला के नैनपुर के भैंसवाही गांव में आरोपियों ने सरकारी जमीन पर कब्जा कर रखा था। यहां अवैध कत्लखाने चलाए जा रहे थे। पुलिस की कार्रवाई के बाद राजस्व विभाग आरोपियों के घरों पर बुलडोजर चला रहा है।

नैनपुर एसडीएम बोलीं-11 घरों में अतिक्रमण पाया गया

नैनपुर की एसडीएम सोनल सिडाम ने बताया कि भैंसवाही में पुलिस बल ने घरों की तलाशी ली थी। यहां 11 घरों में गोवंश के अवशेष मिले। जांच में पाया गया कि इन घरों में अतिक्रमण करना पाया गया। इस मामले में यहां पहले भी प्रकरण चल रहा था। जिसके बाद शनिवार को राजस्व विभाग की टीम अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई कर रही हैं।

एसपी बोले- आरोपियों ने अतिक्रमण कर बनाए घर

एसपी रजत सकलेचा ने बताया, मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर पुलिस टीम ग्राम भैंसवाही पहुंची थी। यहां 11 घरों में गौवंश के अवशेष मिले हैं। आरोपियों के घर अतिक्रमण में पाए गए हैं, जिन पर राजस्व विभाग कार्रवाई कर रहा है।

परिक्रमा

भागवत ने राजनेताओं को अहंकार छोड़ने की दी सलाह

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।

संपर्क-
09425010804
07999673990

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने राजनेताओं को अहंकार छोड़ने की सलाह दी थी लेकिन उनके इस बयान के बाद बहस छिड़ना थी और वह छिड़ गई। भले ही भाजपा नेताओं ने अपने आप को इस बहस से दूर रखा लेकिन फिर भी राजनीतिक गलियारों में यही माना गया कि उनकी सलाह खासतौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कुछ भाजपा के उन नेताओं को है जिनके चेहरे, बॉडी-लैंग्वेज और बोलने के अंदाज से अहंकार टपकता नजर आता है। उन्होंने सलाह केवल भाजपा नेताओं को नहीं दी थी बल्कि आमचुनाव के दौरान जिस प्रकार कुछ राजनीतिक दलों के नेताओं में जो अहंकार उनके अनुसार था उनको सलाह दे रहे थे। लेकिन सारी बहस केवल भाजपा नेताओं तक सिमट कर रह गयी। विपक्षी दल के नेताओं ने तत्काल ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधना प्रारंभ कर दिया और एक रणनीति के तहत भाजपा ने इस पर एक प्रकार से चुप्पी साध ली, क्योंकि भाजपा में अधिकांश नेता और पदों पर बैठे लोग संघ की पाठशाला से दीक्षित होकर ही निकले हैं। संघ के महत्वपूर्ण अंग इंद्रेश कुमार ने जो कहा उससे साफ हो गया कि वह मोहन भागवत के इशारे को और अधिक परिभाषित कर रहे हैं ताकि जिनको संदेश देना है उन तक पहुंच सके। इंद्रेश ने यह कह कर कि भाजपा के अहंकार ने उसको 241 पर रोक दिया है। इसका सीधा-सीधा अर्थ यही लगाया गया कि इंद्रेश कुमार का इशारा सीधे-सीधे मोदी की ओर है, क्योंकि मोदी की अगुवाई में और मोदी की गारंटी के सहारे एनडीए गठबंधन ने चुनाव लड़ा था। हालांकि गठबंधन ने तो 293 सीटें जीत कर बहुमत पा लिया लेकिन भाजपा की स्थिति कमजोर हुई और वह अपने अकेले दम पर बहुमत से दूर रह गयी।

लोकसभा चुनाव में भाजपा केवल नरेंद्र मोदी के चेहरे व गारंटियों के भरोसे थी और विपक्षी दलों के इंडिया महागठबंधन ने किसी चेहरे के भरोसे चुनाव नहीं लड़ा था लेकिन कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पूरे देश में चुनाव प्रचार किया और कांग्रेस के साथ ही पूरे गठबंधन के लिए वोट मांगे तथा ऐसा करते समय उन्होंने अपने क्षेत्रीय सहयोगियों को भी आगे रखा, इसका ही यह नतीजा रहा कि इस गठबंधन को भी उल्लेखनीय सफलता मिली तथा वह भाजपा से कुछ कदम ही पीछे रहा। इस रणनीति का कांग्रेस को भी फायदा मिला और वह अपनी सीटों की संख्या बढ़ाकर 99 तक ले गयी जबकि प्रधानमंत्री मोदी यह कहते रहे कि इस बार कांग्रेस की संख्या 40 से भी नीचे आ जायेगी। इस बार संसद का जो पहला सत्र होगा उसमें ही सदन का नजारा बदला-बदला नजर आयेगा क्योंकि इस बार काफी मजबूत प्रतिपक्ष भी सदन मौजूद होगा। इससे पूर्व अपने दो कार्यकाल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपनी मर्जी से सरकार चलाने में कोई दिक्कत नहीं आई, लेकिन इस बार सहयोगियों को भी संभाल कर रखना होगा क्योंकि एक मजबूत विपक्षी भी सामने बैठा नजर आयेगा। जहां तक भाजपा के बहुमत से नीचे आने और उसके बाद संघ प्रमुख मोहन भागवत का बयान, संघ की पत्रिका आर्गेनाइजर में छपा लेख एवं इंद्रेश कुमार के आरोपों से कुछ समय

तक सियासी घमासान तेज होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता। भाजपा का प्रयास होगा कि जितना जल्दी हो यह विवाद थमे और संघ भी नहीं चाहेगा कि ऐसी स्थिति लम्बे समय तक चले ताकि भाजपा और एनडीए के लिए असहज स्थितियां उत्पन्न हों। लेकिन प्रतिपक्षी दल और संघ तथा भाजपा से वैचारिक मतभेद रखने वाले अन्य सामाजिक संगठन तथा विचारक जितना हो सकेगा इसे लम्बा खींचने की कोशिश करेंगे।

इस विवाद की शुरुआत वास्तव में उसी समय हुई जब भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और अब केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री बने जेपी नड्डा ने एक इंटरव्यू में कहा था कि अब भाजपा को संघ की जरुरत नहीं है, पहले उसे संघ की जरुरत पड़ती थी जब वह कमजोर थी लेकिन अब भाजपा काफी शक्तिशाली हो गयी है। उस समय भी यह समाचार सामने आये थे कि संघ ने इस बयान पर एतराज जताया है और वह इससे प्रसन्न नहीं है। लेकिन वह इस बात को जानने कोशिश अवश्य करता रहा कि आखिर नड्डा ने यह बयान किसके कहने पर दिया, क्योंकि यह एक ऐसा बयान था जो संघ और भाजपा के आपसी रिश्तों में खटास पैदा कर सकता था और हुआ भी वैसा ही। चूंकि संघ की प्लानिंग कुछ और थी और इस बीच भाजपा का बहुमत से दूर रह जाना भाजपा के अंदर ही कुछ सवाल छोड़ रहा था जो अनेकों के दिमाग में थे लेकिन पूछने का साहस कोई नहीं कर पा रहा था। इन परिणामों से प्रतिपक्षी के दल इसलिए उत्साहित हैं कि उन्हें अब इस बात का भरोसा हो गया है कि मोदी के चेहरे के रहते हुए भी भाजपा को चुनाव में हराया जा सकता है, और वह अधिक उत्साह तथा बढ़े हुए मनोबल के साथ महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव में उतरेगा तथा दोनों राज्यों की सत्तासीन भाजपा को बेदखल करने की कोशिश करेंगे। भाजपा की भी चिन्ता यही है क्योंकि उसकी बैसाखी पर ही सरकार चला रहे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अपरोक्ष रुप से टीका-टिप्पणी करने लगे हैं। शिन्दे का कहना यही है कि 400 पार के नारे के कारण ही महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाला महागठबंधन उनसे काफी आगे रहा। उल्लेखनीय है कि भाजपा को महाराष्ट्र में केवल 9 सीटें मिलीं जबकि उसने 28 सीटों पर अपने प्रत्याशी खड़े किए थे। वहीं कांग्रेस के खाते में सबसे अधिक 13 सीटें गईं और इसे मिलाकर विपक्षी गठबंधन ने 30 सीटें जीत लीं। शरद पवार और उद्धव ठाकरे तथा कांग्रेसी नेता अभी से विधानसभा चुनाव की जमीनी जमावट में भिड़ गए हैं। जब कोई पार्टी चुनाव जीतती है तब उस समय उसकी सारी कमजोरियों को नजरअंदाज कर दिया जाता है और इक्का-दुक्का जो स्वर उठते हैं वे नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह जाते हैं, लेकिन जब पार्टी हारती है और उसकी सीटों में कमी होती है तो यही स्वर मुखरित होने लगते हैं। केरल के पलक्कड़ में भाजपा सहित 36 संगठनों के शीर्ष पदाधिकारियों की जो राष्ट्रीय समन्वय बैठक आगामी माह के अंतिम दिन से प्रारंभ होने वाली है उसमें इन चुनाव नतीजों की समीक्षा होगी ही, क्योंकि उसके बाद कुछ राज्यों में इस वर्ष एवं अगले वर्ष विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। केरल में तो इस बार भाजपा का खाता भी खुल गया है और वह उसका जो मत प्रतिशत भी बढ़ा है उसे और अधिक बढ़ाने के लिए भी रणनीति तैयार करेगी, क्योंकि उसका जो अब प्रवेश द्वार खुला है वहां अपने आपको मजबूत करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देगी।

और यह भी

लोकसभा चुनाव में जहां कांग्रेस की अपनी कुछ जमीन रही है ऐसे राज्य छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में उसे लोकसभा चुनाव में करारी हार मिली लेकिन छत्तीसगढ़ में चरणदास महंत जो कि इस समय नेता प्रतिपक्ष भी हैं अपना गढ़ को बचाने में सफल रहे, जबकि पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ में ही चुनाव हार गये। चरणदास महंत ने विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी पत्नी ज्योत्सना महंत को लोकसभा औचुनाव जिताने में सफलता हासिल की और यही बताता है कि आज भी उनका अपने इलाके में दबदबा बाकी है, जबकि अन्य दिग्गज नेता जो प्रदेश के कम जातियों के नेता अधिक थे, वह अपने गढ़ों को बचाने में विफल रहे। इसके विपरीत मध्यप्रदेश में सभी 29 सीटों पर कांग्रेस की पराजय हुई और कमलनाथ अपने उस गढ़ को भी नहीं बचा पाये जिसे 1977 में कांग्रेस ने जीतकर बचाया था। यहां तक कि कमलनाथ अपने बेटे नकुलनाथ की जीती हुई सीट भी लगभग एक लाख मतों के अंदर से हार गये।

नीलम जयंती शब्द उत्सव में जुटे रचनाकार

भोपाल (नप्र)। ग़ज़ल साहित्य की सबसे चहेती, लोकप्रिय और सबसे ज़्यादा कोट की जाने वाली विधा रही है और रहेगी. ग़ज़ल का भविष्य उज्जवल है और वह समय के साथ वह अपनी भाषा और तेवर तलाशती तराशती रहेगी। ये बातें इकबाल मसूद, नुसरत मेहदी, पंकज सुबीर और एहसान आज़मी जैसे शायरों ने युवा शायर भवेश दिलशाद द्वारा संचालित परिचर्चा ग़ज़ल आज और कल सत्र में कहीं, जो मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के साहित्यिक उत्सव के पहले दिन चर्चित रहा।

नीलम जयंती शब्द उत्सव का तीन दिवसीय आयोजन शुक्रवार को वृक्षारोपण से शुरू हुआ। इस उपलक्ष्य पर मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन ने 650 पौधे रोपने का संकल्प लिया, जिसमें पहले दिन 150 से ज्यादा पौधे पुलिस आवासीय परिसर में लगाए गए, इसके मुख्य अतिथि के तौर पर पुलिस अधीक्षक (दूरसंचार) शशांक गर्ग मौजूद रहे। इस अवसर पर मायाराम सुरजन भवन में विधिवत उद्घाटन सत्र हुआ। साथ ही तीन दिवसीय मेले का भी उद्घाटन किया गया। मेले में तकरीबन 20 स्टॉल में किताबें, हैंडलूम, हैंडीक्राफ्ट और हाथ से बनी अन्य कई सामग्री उपलब्ध है। मुख्य अतिथि अनुराधा शंकर जी ने अपने संबोधन में कहा, सम्मेलन मेरे लिए परिवार की तरह है और मैं हमेशा एक सदस्य की तरह हर कार्य में शामिल रहूंगी। कार्यक्रम की विशेषता तिथि श्री रवि श्रीवास्तव जी ने अपने संबोधन ने कहा, हमने मध्य प्रदेश से जो भी साहित्य की विरासत प्राप्त की है उसे अब तक संभाल कर रखी है।

वर्तमान समय में साहित्य और चुनौतियां पर हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ बहादुर सिंह परमार ने की। साथ ही प्रतिभागी के रूप मे तरुण गुहा नियोगी और कैलाश बनवासी भी मौजूद रहे। इस सत्र के सूत्रधार महेश प्रकाश श्रीवास्तव थे। आज के दूसरे सत्र में खलील जिब्रान का विमोचन हुआ।

सायंकालीन सांस्कृतिक सत्र में लिपिका चक्रवर्ती ग्रुप ने मीरा की जिंदगी पर नृत्यांगना नाटिका की प्रस्तुति दी। और सृष्टि गुप्ता ने कथक नित्य के साथ शुभारंभ की आभा को चारो ओर मुखर कर दिया।

रेकी गुरु किरण दाते की पुस्तक का लोकार्पण आज

भोपाल। रंगशीर्ष संस्था के तत्वावधान में कल सुपरिचित रेकी गुरु किरण दाते की पुस्तक ÷रेकी = बदलती है दुनिया÷ भी का लोकापर्ण वरिष्ठ आईएएस अधिकारी डॉक्टर वीणा घाणेकर करेंगी। दुष्यंत कुमार पांडुलिपि संग्रहालय में कल 16 जून, सायं साढ़े छ बजे आयोजित कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि के रूप में आइएएस श्रीमती रश्मि शमी उपस्थित रहेंगी। किताब पर सुप्रसिद्ध रंगकर्मी संजय मेहता एवम प्रोफेसर सरोज रागणेकर का वक्तव्य होगा।

भोपाल में युवक ने कुत्ते को रॉड से पीटा

- पिपलानी की रिद्धि-सिद्धि कॉलोनी की घटना; पेट लवर ने दर्ज कराई एफआईआर

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पिपलानी इलाके में स्थित रिद्धि-सिद्धि कॉलोनी में रहने वाले युवक ने घर के आंगन में बैठे स्ट्रीट डॉग पर रॉड से कई वार किए। घटनाक्रम सीसीटीवी में कैद हुआ है। इसके बाद पशु प्रेमी की शिकायत पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। आरोपी युवक की गिरफ्तारी नहीं की जा सकी है। पुलिस के मुताबिक स्वाति गौरव पीपुल्स फॉर एनिमल नाम संस्था की पदाधिकारी हैं। उनकी संस्था पशुओं और स्ट्रीट डॉग के लिए काम करती है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव बोले- शिप्रा तीर्थ परिक्रमा केवल यात्रा नहीं पुरातात्विक

आध्यात्मिक स्थलों के महत्व को बढ़ाने, सहेजने और संवारने का माध्यम बनेगी

- मुख्यमंत्री डॉ.यादव के नेतृत्व में मां शिप्रा तीर्थ परिक्रमा में धर्म आस्था और विश्वास का जन-सैलाब उमड़ा
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मोक्षदायिनी शिप्रा की पूजा-अर्चना कर शिप्रा तीर्थ परिक्रमा का शुभारंभ किया
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव हजारों श्रद्धालुओं के साथ शिप्रा तीर्थ परिक्रमा में शामिल हुए

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मां शिप्रा तीर्थ परिक्रमा केवल यात्रा नहीं यह शिप्रा तट पर स्थित पुरातात्विक, आध्यात्मिक स्थलों के महत्व को बढ़ाने, सहेजने, संवारने का माध्यम बनेगी। मुख्यमंत्री डॉ यादव आज उज्जैन के पावन रामघाट पर मां शिप्रा तीर्थ परिक्रमा के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि महाकाल की नगरी उज्जयिनी में पुण्य पावन सलिला मोक्षदायिनी शिप्रा के रामघाट पर शिप्रा तीर्थ परिक्रमा के शुभारंभ अवसर पर धर्म, आस्था और विश्वास का अद्भुत दृश्य निर्मित हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रामघाट पर शिप्रा की पूजा-अर्चना अभिषेक व आरती कर ध्वज का पूजन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश की नदियों, जल संरचनाओं के संरक्षण, संवर्धन और पुनरुद्धार को समर्पित जलाभिषेक अभियान का उपस्थित जन और प्रदेशवासियों को संकल्प दिलाकर शिप्रा तीर्थ परिक्रमा का शुभारंभ किया।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जल एवं पर्यावरण संरक्षण और पौधरोपण के कार्य जारी- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत प्रदेश में जल एवं पर्यावरण संरक्षण, नदी पुनरूद्धार एवं पौधारोपण के कार्य किये जा रहे हैं। भारत में जन्म होना भाग्य है और उज्जैन व उसके आसपास जन्म लेना सौभाग्य की बात है। पुण्य-सलीला शिप्रा में 11 नदियां समाहित हैं। इसके किनारे पर 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास है। सभी तीर्थों में अवंतिका तीर्थ बड़ा माना जाता है। शिप्रा तीर्थ परिक्रमा केवल यात्रा नहीं यह शिप्रा तट पर स्थित पुरातात्विक, आध्यात्मिक स्थलों के महत्व को बढ़ाने, सहेजने, संवारने का माध्यम बनेगी। वैदिक घड़ी के माध्यम से उज्जैन का स्टेण्डर्ड समय देश-दुनिया के समय के रूप में पुनर्स्थापित होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं की सुख-समृद्धि की कामना करते हुए परिक्रमा की सफलता के लिये बधाई दी।

पुष्प वर्षा से हुआ शिप्रा तीर्थ परिक्रमा का स्वागत- मुख्यमंत्री डॉ. यादव संत समाज, श्रद्धालुओं और जनप्रतिनिधियों के साथ शिप्रा तीर्थ परिक्रमा में पैदल चलकर शामिल हुए। परिक्रमा करने वालों में अपार उत्साह था, तीर्थ यात्रियों के हाथों में परिक्रमा के ध्वज लहरा रहे थे। परिक्रमा मार्ग पर विभिन्न धार्मिक-सामाजिक और स्वयंसेवी संगठनों ने पुष्पवर्षा कर शिप्रा तीर्थ परिक्रमा का स्वागत किया।

उज्जैन के सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों पर पहुंचेगी यात्रा : गंगा दशहरा पर होगा समापन

शिप्रा तीर्थ परिक्रमा यात्रा रामघाट से प्रारंभ होकर नृसिंहघाट, आनन्देश्वर मंदिर, जगदीश मंदिर, गऊघाट, जंतर-मंतर, वरूणेश्वर महादेव मंदिर (शीतल गेस्ट हाउस) से इन्दौर रोड सीएचएल अस्पताल, प्रशांतधाम मंदिर, गुरूकुल (त्रिवेणी) नवग्रह शनि मंदिर पहुंचेगी तथा यहां दोपहर का भोजन व विश्राम होगा। इसके पश्चात यात्रा गोठडा, सिंकदरी, दाउदखेड़ी, चांदमुख, चिंतामण, मंगरौला फंटा, लालपुल, भूखी माता मंदिर से गुरूनानक घाट होते हुए दत्त अखाडा पहुंचेगी। यहां पर रात्रि विश्राम किया जायेगा। इसके पश्चात रविवार 16 जून को घाट पर स्नान के पश्चात यात्रा रंजीत हनुमान, कालभैरव, सिद्धनाथ, अंगारेश्वर, कमेड, मंगलनाथ, सांदीपनी आश्रम, राम मंदिर, गढकालिका, भृर्तृहरि गुफा, ऋणमुक्तेश्वर, वाल्मीकी धाम चक्रतीर्थ, दानीगेट, ढाबारोड़, गोपाल मंदिर, पटनी बाजार, गुदरी चौराहा, महाकाल मंदिर, बडा गणेश मंदिर, हरसिद्धी से वापस रामघाट पहुंचेगी।

पौने दो करोड़ पौधे लगाए जाएंगे शहरों में

भोपाल-इंदौर में 15-15 लाख पौधे रोपने का टारगेट, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन में दस-दस लाख रोपेंगे

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के सभी शहरों में 15 जुलाई से 15 सितम्बर तक पौधरोपण अभियान चलाया जायेगा। इन शहरी क्षेत्रों में एक करोड़ 75 लाख पौधे रोपे जाएंगे। इसमें सबसे अधिक भोपाल और इंदौर में 15-15 लाख पौधे रोपे जाएंगे। नगर निगम ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन में 10-10 लाख और शेष 11 नगर निगम में 5-5 लाख पौधे रोपे जायेंगे।

पौधरोपण का कार्य नगरीय निकाय की स्वयं की हरित क्षेत्र के लिये आरक्षित भूमि, अन्य शासकीय भूमि तथा निजी कालोनियों में हरित क्षेत्र के लिये आरक्षित भूमि में किया जाएगा। निजी कालोनियों में पौधरोपण जन-सहयोग से होगा। निकाय द्वारा पौधों की आपूर्ति नगरीय निकाय एवं वन विभाग की नर्सरी तथा स्थानीय रूप से उपलब्ध पौधों से की जायेगी। पौधरोपण कार्य वन, उद्यानिकी तथा नगरीय निकाय के स्वयं की उद्यानिकी शाखा के तकनीकी मार्ग दर्शन में किया जायेगा। अभियान में स्मृति वन, नक्षत्र वन, संस्कृति वन विकसित करने को प्रोत्साहित करने को कहा गया है।

यहां इतने पौधे रोपे जाएंगे- नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने सभी कलेक्टरों को इस संबंध ने निर्देश जारी कर कहा है कि अन्य विभागों के साथ मिलकर पौधरोपण अभियान चलाएं। बारिश के दौरान अधिक से अधिक पौधे रोपे जाएं। विभाग ने कहा है कि एक लाख एवं इससे अधिक जनसंख्या की 17 नगर पालिकाओं में एक-एक लाख, एक लाख से कम जनसंख्या वाली 82 नगर पालिका में 15-15 हजार और 298 नगर परिषद में 10-10 हजार पौधे रोपे जाने हैं।

छायादार और औषधीय पौधों का करना है चयन- शासन ने कहा कि अभियान में छायादार और औषधीय प्रजाति के पौधों का चयन किया जाना है। सजावटी एवं हेज प्लांट का उपयोग नहीं होगा। निकायों द्वारा किये जाने वाले पौधरोपण की सुरक्षा का उचित प्रबंध करने को भी कहा गया है। पौधों की निगरानी एवं रख-रखाव में निकाय द्वारा गैर सरकारी संस्थाओं और आम नागरिकों से सहयोग लेने के लिए कहा गया है। निकायों द्वारा वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट तथा सांइन्टिफिक लैंडफिल परिसर में पौधरोपण का कार्य अनिवार्य रूप से करने को कहा गया है।

इनकी भी रहेगी भागीदारी- साथ ही जन-अभियान परिषद, स्वयंसेवी संस्थाओं, स्व-सहायता समूह, एनएसएस, एससीसी तथा स्कूल, कॉलेज के छात्र-छात्राओं को भी इस अभियान से जोड़ने के निर्देश दिये गये हैं। वर्तमान में नगरीय निकायों में अमृत 2.0 योजना अंतर्गत हरित क्षेत्रों का विकास कार्य प्रचलित है। पौधरोपण अभियान में वित्तीय व्यवस्था अमृत 2.0 योजना अंतर्गत उपलब्ध राशि, नगरीय निकाय में उपलब्ध स्वयं के स्त्रोत से तथा जन-सहयोग से की जायेगी।

मानसून दौरान अतिवृष्टि की स्थिति से निपटने एम.पी. ट्रांसको के फील्ड पूरी तैयारी करे

भोपाल (नप्र)। जबलपुर में आयोजित दो दिवसीय प्रदेश स्तरीय एम.पी. ट्रांसको (मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी) की त्रैमासिक रिव्यू मीटिंग में प्रबंध संचालक इंजीनियर सुनील तिवारी ने निर्देश दिए कि फील्ड के अधिकारी समय रहते प्रदेश में अतिवृष्टि की स्थिति से निपटने की पूरी तैयारी कर लें। उन्होंने कहा कि ट्रांसमिशन लाइनों और सब स्टेशनों में आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने के लिए आवश्यक स्पेयर पार्ट्स मौजूद रखें। इस बात की भी पूरी तैयारी कर लें कि विषम परिस्थितियों में मध्य प्रदेश के किसी भी कोने में इन सामानों को पहुंचाने के लिए कैसी व्यवस्था रहनी चाहिए। उन्होंने मानसून पूर्व ट्रांसमिशन लाइनों, उन पर ट्रिपिंग और सबस्टेशनों के मेंटेनेंस कार्यों की प्रगति की समीक्षा भी की।

उन्होंने ट्रांसमिशन लाइनों पर होने वाली ट्रिपिंग की समीक्षा कर इसे न्यूनतम रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होंने क्षेत्र के विभिन्न ट्रांसमिशन लाइनों और सबस्टेशनों की क्षमता तथा उन पर लोडिंग की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि किसी भी लाइन या सबस्टेशन में निर्धारित सीमा से अधिक लोड न डाला जाये।

पुस्तक चर्चा

एकता कानूनगो बक्षी

सपनों की बारिश

आदरणीय दुर्गा प्रसाद झाला सर की किताब ÷सपनों की बारिश÷ पढ़ने का अवसर मिला। इस किताब से गुज़रते हुए रवींद्रनाथ टैगौर साहब का यह विचार लगातार बना रहा प्रसन्न रहना बहुत सरल है, लेकिन सरल होना बहुत कठिन है । सर की कविताओं में भी नैसर्गिक सरलता का बोध महसूस होता है। जटिल मुद्दों के समाधान का रास्ता भी उस सरल सहज निर्मल रास्ते से होकर गुजरता हुआ प्रतीत होता है जिस में किसी तरह की कपटता मौजूद नहीं होती। झाला सर की कविता 'ऐसी दुनिया बनाएँ' की इस पंक्ति पर गौर करें - एक ऐसी दुनिया / बनाना है / जिसमें हर प्राण / फूल- सा महकता हो// वह दुनिया/ एक सीधी - सरल/ रेखा- सी हो/ जिसमें कोई वक्रता न हो।

सरल व्यक्तित्व इन दिनों दुर्लभ सा है , और अगर किसी के भीतर सरलता बची भी है तो समाज द्वारा बनाई जीवन को जीने की जटिल पहेलियों के बीच वह कहीं हारी हुई निराश सी ही मिलेगी। जबकी सरलता के माध्यम से ही जीवन का असली अर्थ हम समझ सकते है, उसके भीतर के रोमांच को हम जी पाते हैं ।

वह जीवन कितना उबाऊ और नीरस हो सकता है जिसमें हम केवल एक अंधी रेस का हिस्सा बन जाते हैं जिसकी धुरी केवल हम और हमारे तक ही सीमित हो जाती है। इतने वर्षों का जीवन क्या बस इतने में ही सिमट जाने के लिए है? क्या जीवन इसे ही कहते हैं - जो हमारी स्वार्थ से भरी चिंताएं हैं, हमारे विचारों की उलझी हुई जटिल गुत्थियां हैं, क्या यह असल में हमारा स्वाभाविक जीवन होना चाहिए?

यह कितना अद्भभुत है कि आज भी हमें ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व से मिलना संभव हो जाता है जिनकी रचनाओं में, जिनके व्यक्तित्व में, हम उस सरलता को महसूस कर सकतें हैं जिनके द्वारा जीवन के वास्तविक अर्थ को हम समझ पाते हैं। आदरणीय दुर्गाप्रसाद झाला सर के पास हमारे सवालों के जवाब हैं ।

उनके व्यक्तित्व का ही विस्तार हमें उनकी कविताओं में मिलता है ।सर की रचनाओं में एक अलग तरह की ताजगी और सरलता है । जब खुद के और समाज के द्वारा बनाई जटिलताओं में हम कही खो से जाते हैं इस किताब की कविताओं के माध्यम से हम खुद से वापस भेंट कर पाते हैं। कई आवरणों में दबी हमारी स्वाभाविक प्रकृति फिर से हमे नज़र आने लगती है। उलझने सुलझने लगती हैं , हम अनावश्यक बोझ से मुक्त हो जाते हैं और हमें सब कुछ स्पष्ट नज़र आने लगता है, ज़रूरी विषयों को लेकर हम सचेत हो जाते हैं ,जीवन को सही अर्थों में समझने लगते हैं। सही के पक्ष में खड़े रहने और संघर्ष करने का साहस भी हम खुद में पाते हैं । सीखने ,समझने और लगातार आगे बढ़ते रहने का जोश हम खुद में पाते हैं।

किताब से गुजरने के बाद यह नयापन, युवा ऊर्जा हमें चकित कर देती है। सर की कविताओं में इतनी ताकत होती है की वह जीवन की सारी अनावश्यक चीज़ों को हम से दूर कर देती है और हमारा परिचय बड़ी ही खूबसूरती से वास्तविक, बुनियादी चीज़ों से करवाती है जिसमें भले से संघर्ष भी मौजूद है पर मुस्कुराहटें, संतुष्टि भी वास्तविक होती है। सर की कविताएँ हमारे जीवन और दुनिया को स्वस्थ रखने के लिए ज़रूरी खुराक की तरह हैं।

कविता - यह एक घर है कि कुछ पक्तियां देखें यह एक घर है / इसके दरवाज़े/ सबके लिए खुले हैं// इसमें हर धर्म के लोग / आते हैं/ और परस्पर प्रेम से / बातें करते हैं// यहाँ आते हैं आदमी / बस आदमी के रूप में / किसी जाति या वर्ण के नहीं // यहां आते हैं / दीन- दलित - भूखे लोग / और अपना अपना / भाग पाते हैं।// इस घर में / किसी आततायी के लिए / कोई जगह नहीं है।

'प्यार का घर'कविता में सर लिखते हैं - मेरे घर में / एक चिड़िया ने / बनाया अपना घर / मेरा घर चहक उठा //मेरे घर के आंगन में / एक नीम का पेड़ लहलहाने लगा / मेरा घर महक उठा //मेरे घर में / अतिथियों की / चहलपहल होने लगी /मेरे घर का सूनापन/ दूर हो गया//

'मैं लिख रहा हूँ' कविता की कुछ पक्तियां देखें - ÷ मैं लिख रहा हूँ /अंधेरे में / सूरज सी कविताएं /मैं लिख रहा हूँ रेगिस्तान में / नदी सी कविताये / मैं लिख रहा हूँ आग के बीच / पानी सी कविताएँ// मैं लिख रहा हूँ/ भूखे पेटों के बीच/ रोटी सी कविताएँ

'मैं खोज रहा हूँ ' कविता की कुछ पक्तियां पढ़ें- मैं खोज रहा हूँ /खुद को भी/जो अपनी कमज़ोरियों से / लड़ता रहता था।

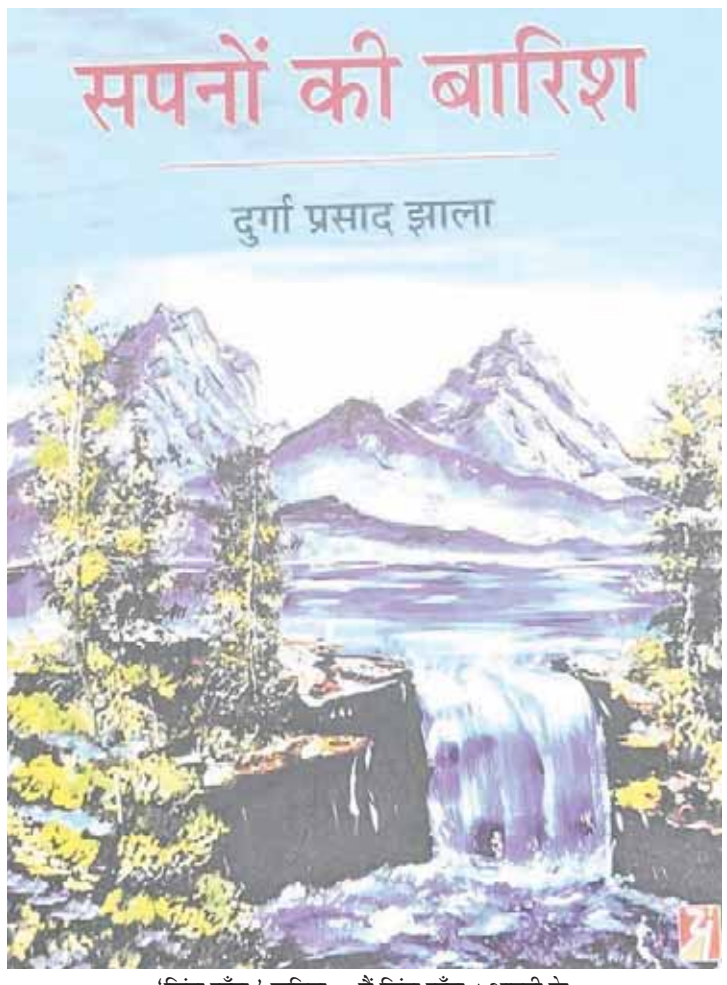

'ज़िंदा रहूँगा ' कविता - मैं ज़िंदा रहूँगा / आदमी के उन सपनों में भी / जिनमें दुनिया को बेहतर से बेहतर/ बनाने की भावना हमेशा / मचलती रहती है।

कविता - ऐसी दुनिया बनाएँ - एक ऐसी दुनिया / बनाना है / जिसमें हर प्राण / फूल - सा महकता हो// वह दुनिया/ एक सीधी - सरल/ रेखा -सी हो/ जिसमें कोई वक्रता न हो// उस दुनिया मे/ दूब सी कोमलता हो/प्रकृति का रास-रंग/नृत्यरत हो// उस दुनिया में/ एक ऐसी नदी बहती हो/जो सबकी प्यास/ बुझाती रहती हो// आओ ऐसी दुनिया बनाएँ/जिसमे/ सबके हक़/ बराबर हों/ और कोई / किसी का हक़/ छीनने वाला न हो।

जीवन की भाषा - कविता जाती है / निर्भीक/ आदमी से आदमी तक /अपने छन्द/ अपने राग के साथ // वह राजमहलों में नहीं/छोटे छोटे घरों में / गुनगुनाती रहती है// वह किसी मंदिर में जाकर/ किसी देवता की / पूजा नहीं करती / किसी महोत्सव में/ शामिल नहीं होती // वह तो कभी खिलखिलाती है/ किसी बच्चे की हँसी में/ कभी किसी माँ के कंठ से / लोरी का गीत गाती है/ कभी किसी झुग्गी - झोंपड़ी में जाकर/ रोटी की गंध सी महकती है//वह जीवन की भाषा है / जीवन उसमें / अपना अर्थ पाता रहता है।

नीति मुक्त राजनीति कविता की यह पक्तियां देखें - राजनीति अब / शतरंज का खेल हो गयी है / प्यादा पिट रहा है/ बादशाह अपने घर में / मौज मज़े में है।

खुश हूँ कविता की यह पक्तियां - खुश हूँ कि / बहुत दिनों बाद/ उस गरीब के घर / चूल्हा जला है,/ और रोटियों से/ महक उठा है/ सारा घर।

आवाज़ कविता की कुछ पंक्तियां - ÷वह आवाज़ ही / आवाज़ होती है/ जो पहाड़ से टकराने पर / प्रतिगूँज बन कर / वापस नहीं आती // वह तो पहाड़ के अंतस को / गहरे तक चीर देती है/ जिससे एक झरना / बह निकलता है// वह आवाज़ / उस विद्रोह की आवाज़/ होती है / जो भूखे पेटों की/ मरोड़ से निकलती है

आँसू गीत बन जाएँगे- भटको मत/ बीती बातों में/ आज को सँवारो/ कल सँवर जाएगा। // दुःखियों के दर्द को / बहाओ अपने आँसुओं में/ तुम्हारे आँसू गीत बन जाएँगे।

कविता - हत्यारे हमारी बुज़दिली में होते हैं- हत्यारे और कहीं / नहीं होते / हमारी बुज़दिली में होते हैं// हत्यारे हमारी आँखों में / होते हैं/ जो देखते हुए कुछ नहीं देखतीं।

कविता बचाना चाहता हूँ कि यह पक्तियां देखें- मैं बचाना चाहता हूँ / आदमी को / बाज़ार की चीज़ बनने से.

जीवन का कविता बनना -

जीवन तब कविता / बन जाता है / जब किसी ग़रीब के / आँसुओं में/ भीगने लगता है // जीवन तक कविता बन जाता है/ जब बच्चों की किलकारी उसमें गूँजने लगती है// जीवन तब कविता / बन जाता है/ जब हत्यारों के ख़िलाफ़/ खड़ा हो जाता है// जीवन तब / जब कोई चिड़िया/ उसके घर में/ अपना घोंसला बना लेती है// जीवन तक कविता/ बन जाता है / जब आदमी के सपने / उसकी शब्द - नदी में / तैरने लगते हैं।

झाला सर की कविताओं का केनवास बेहद विस्तृत है, उनकी कविताएं महत्वपूर्ण विषयों पर विमर्श करती नज़र आती हैं। सर की कविताएँ उम्मीद की कविताएं ज़रूर हैं पर यह किसी स्वप्नलोक की सैर नही करवाती , वह ज़मीनी सच्चाई से हमें रूबरू करा रही होती हैं । घासीदास और राम दास जैसी कविताओ में वह खुल कर संकेत देते है कि निर्बल की कोशिशें भी अक्सर स्वार्थी निष्ठुर समाज के सामने घुटने टेक देती हैं । राजनीति और बाज़ारीकरण की धूर्ततता से वह हमें सचेत करते हैं ।उनकी कविताओं के माध्यम से वह लगातार हमें उस सुंदर, स्वस्थ दुनिया के करीब लाने का प्रयास कर रहे होते हैं जो कि केवल सरलता, आत्मीयता, निस्वार्थ प्रेम, सेवा भाव और साहस से ही संभव हो सकती है। सर के विचार, उनकी किताबें हमारे लिए पथप्रदर्शक हैं, उनकी किताब 'सपनों की बारिश' की हर कविता हमें दिशा देती है जिसके माध्यम से हम निष्पक्ष, समानता और सौहार्द से पूर्ण निर्मल, संवेदनशील दुनिया का निर्माण कर सकेंगे ।

अंत मे सर की यह कविता पढ़ें।

एक दिन तमाम बच्चे

एक दिन तमाम बच्चे / तुम्हारी नफ़रत को/ धरती के अंदर गाड़ देंगे / और प्यार के गीत गाएँगे // एक दिन तमाम बच्चे / तुम्हारी बंदूकों को / छीन लेंगे/ और फूलों तितलियों से बातें करेंगे // एक दिन तमाम बच्चे /युद्ध के मैदानों को / खेल के मैदानों में बदल देंगे/ और कबड्डी का खेल खेलेंगे/ एक दिन तमाम बच्चे आदमी और आदमी के बीच खड़ी दीवारों को ढहा देंगे / और सबके लिए / एक बड़ा घर बना देंगे / एक दिन .. क्रूरता के ख़िलाफ़/ लड़ाई छेड़ देंगे / और चारों ओर/ अमन की पताका / फहरा देंगे

पुस्तक- सपनों की बारिश कवि - दुर्गाप्रसाद झाला , प्रकाशक - अंतिका प्रकाशन गाज़ियाबाद, मूल्य - 395)

लघुकथा

जैसा बोएगें वैसा ही काटेंगे

वैदेही कोठारी

सभी महिलाए पार्टी को एन्जॉय कर रही थी, हँसी-मज़ाक का माहौल बना हुआ था, तभी कुछ सामाजिक विषयों पर चर्चा भी शुरू हो गई। शर्मीला बोली, क्यों न अपन सभी एक वृद्धा आश्रम खोल ले?

वर्षा बोली, क्यों?

अरे! देखो आजकल के बच्चे अपने पास रहेंगे कि नहीं! अगर रहे तो उनकी पत्नियों से पटेगी कि नहीं!

रवीना बोली, हाँ यार ये बात तो सच है।

जया बोली, कल ही मैंने अख़बार में पढ़ा था, सास बहु की लड़ाई से घर टूट रहे है।

निरु बोली, इसका मतलब यह तो नहीं, हम पहले से ही वृद्धा आश्रम में चले जाए?

रजनी बोली, देखो पांचो उंगलियां बराबर नहीं होती है।

हम पहले से ही क्यों सोचे यह बात! माहौल थोड़ा शांत सा हो चूका था।

शर्मीला हँसते हुए बोली, अभी अपने बच्चे कॉलेज में पढ़ रहे है, हम इतने आगे की क्यों सोच रहे हैं यार!

अंदर से आवाज़ आई, बेटा गणेश जी का प्रसाद लेते हुए जाना सभी!

हाँ मम्मीजी

मम्मी जी बाहर आई सभी ने मम्मी जी के पैर छू कर नमस्कार किया और प्रसाद लिया।

मम्मी जी के जाने के बाद विधी बोली, देखो मेरी प्रिय सखियों हम सभी अपने-अपने पेरेंट्स के साथ रहते हैं।

हमारे बच्चे यह सब देख रहे हैं, जब हम, हमारे बुजुर्ग सास-ससुर की रिस्पेक्ट कर रहे हैं! परिवार में प्यार बनाए हुए है, हमारे बच्चे समझदार हैं,उन्हें परिवार का महत्व पता!÷विधी की बात खत्म होने से पहले ही जया बोल पड़ी, जैसा बोएगें-वैसा ही काटेंगे! वर्षा भी बोल पड़ी, बोए पेड़ बबुल का आम कहाँ से पाए सभी जोर-जोर से हँसने लगे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मोहन वर्मा

संवेदनशील विषय पर चुप्पी तोड़ना जरूरी

कहने को तो हमारे समाज में स्त्री पुरुष समानता, महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ जैसी लुभावनी बातें नारों की शक्ल में बार बार सामने आती है,मगर धरातल पर हकीकत कुछ और ही है।

अपनी क्षमता के बूते लड़कियों के आसमान छूने और परचम लहराने की खबरों के बीच आज भी कितनी ही कुरीतियों और रूढ़ियों में जकड़े हमारे समाज से आए दिन ऐसी खबरें सामने आती है जो हमें सोचने को मजबूर करती है।

दरअसल आज सोशल मीडिया के उफान के इस समय में हर व्यक्ति किसी भी जरूरी और गैरजरूरी विषय पर अपना ज्ञान देने को तैयार रहता है मगर कई बार अपने घर परिवार,समाज और देश के महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील विषयों पर चुप्पी ओढ़ लेता है। अपवादों को छोड़ दें तो घर में बेटे बेटियों में फर्क से लेकर बेटियों की उच्च शिक्षा में कोताही, कम उम्र में शादी,बेटों की बनिस्बत बेटियों पर कड़ी नजर साफ नजर आती है।

बेटियों के किशोरावस्था तक आते उसके शारीरिक परिवर्तन,मासिक धर्म जैसे गंभीर विषयों पर कई बार परिजन ही उसके साथ मित्रवत नहीं होते फिर इस विषय पर गांवों कस्बों में हायजनिक पैड की जगह गंदे कपड़ों के उपयोग को रोकने और उनके यहां वहां फेंके जाने पर भी सही सलाह की जरूरत होती है।

कई बार कस्बों शहरों में पैड वितरित करने वाली संस्थाओं के कार्यक्रमों में आयोजक और अन्य उपस्थित पुरुष वर्ग इसे महिलाओं का मामला समझकर स्थल से कुछ दूरी भी बना लेते है जिसपर एक जिम्मेदार महिला अधिकारी का कहना है कि स्वच्छता,हाइजीन से संबंधित इस विषय पर जेंडर से हटकर सबको चुप्पी तोड़ने और खुलकर बात करने की जरूरत है क्योंकि ये संवेदनशील विषय हर पुरुष के घर में मां, बहन, बेटी और सभी महिलाओं से संबंधित है ।

इसी तरह सैक्स विषय को लेकर भी वैज्ञानिक तरीके से परिवार के बच्चों और सदस्यों की जिज्ञासा पर खुलकर बात की जानी चाहिए क्योंकि आज हर हाथ में उपलब्ध मोबाइल नामक खिलौना उन्हें वो सब खुलेआम दिखा रहा है जिसपर बात करने से घरों में संकोच और चुप्पी सामने आती है।

आज के व्यस्त समय में एक तरफ तो बच्चों में खत्म होते संस्कारों की,नैतिकता की बातें होती है और दूसरी तरफ परिजन अपनी अपनी व्यस्तता के बीच बच्चों से ठीक से संवाद भी नहीं कर पा रहे है ऐसे में उनकी छोटी बड़ी समस्याओं,जिज्ञासाओं के लिए भी उनके पास समय नहीं है तो फिर संस्कारों के लिए किसे दोष दिया जाए ?

दरअसल आज ज्ञान तो चारों तरफ बिखरा है और हरेक ज्ञानी है मगर संवेदनशील मुद्दों फिर चाहे बेटियों के कठिन दिनों की बात हों या पारंपरिक रूढ़ियों की,बेटे बेटी में फर्क की बात हो या मोबाइल में छुपे गुप्त ज्ञान की बात हो या बच्चे किस दिशा में जा रहे है इस बात की अनदेखी की बात हो,इन सभी और इन जैसे संवेदनशील मुद्दों पर चुप्पी तोड़ना जरूरी है।

लघुकथा

सुखद अवकाश

स्वाति 'सखि' जोशी

गणेऽऽऽश, ए गणेश, वहाँ बाईक पर बैठे - बैठे मोबाईल में क्या देख रहा है? चल, यहाँ आ, ये सब्जी का थैला वो बाजू वाली 'सी' बिल्डिंग में सातवीं मंजिल वाली शर्मा आँटी के यहाँ पहुँचा दे।

फल सब्जी बेचने वाली शारदा ने अपने दस - ग्यारह वर्ष के बेटे गणेश को कुछ चिढ़े हुए अंदाज़ में आवाज़ देकर कहा।

बात यह थी, कि नवरत्न सोसायटी में शारदा और उसका पति विजय सब्जी का स्टॉल लगाते थे, और आज सुबह कनात बांधते - बांधते विजय गिर पड़ा था और उसके पैर में चोट लगी थी इसलिये आज शारदा को अकेले ही सारा काम संभालना था। ग्राहकों की लाईन बढ़ती जा रही थी, और धूप में,बिना कनात के वह सब्जी बेच रही थी। उपर से, कुछ ग्राहक फोन कर - कर के घर तक सब्जी मंगवा रहे थे। विजय हमेशा अपनी बाईक पर जाकर उन्हें सब्जी पहुँचा आता था, मगर आज उसे चोट आने की वजह से वह एक जगह बैठ गया था। सोसायटी बड़ी होने की वजह से वहाँ की बिल्डिंगों के बीच काफी फासला था, मगर उन्हें ग्राहकी भी अच्छी मिल जाती थी इसलिये वे दोनों यहाँ अपना स्टॉल लगा लेते थे ? आज काम की अधिकता, और धूप की वजह से शारदा असहाय - सा महसूस कर रही थी।

वो तो अच्छा हुआ कि मैं गणेश को अपने साथ यहाँ ले आई, वरना धूप में गली के बच्चों के साथ इधर - उधर घूमता फिरता... फिर आजकल किसी का क्या भरोसा? बच्चों को बुरी संगत में पड़ते देर नहीं लगती! थैले में सब्जी भरते- भरते शारदा ने मन ही मन सोचा।

ले, ये थैला ले जा। कहकर शारदा ने गणेश को थैला पकड़ा दिया। सुबह दस- ग्यारह बजे की धूप भी कम नहीं थी।उपर से सब्जियों का बोझ! गणेश कभी इस हाथ में, तो कभी उस हाथ में थैला टांगकर 'सी'बिल्डिंग की तरफ चल पड़ा।

चलते-चलते वह सोच रहा था कि इस बार गर्मी की छुट्टियों में वह नानी के गाँव भी नहीं जा पाएगा। पापा को चोट जो लग गई है। सारी छुट्टियाँ माँ के साथ सब्जी बेचने में ही बीत जाएंगी। खैर, वह कर भी क्या सकता था। वह धीरे-धीरे 'सी' बिल्डिंग की तरफ बढ़ता गया। सातवीं मंजिल पर पहुँच कर उसने बेल बजाई।

चिंटूऽऽऽ, दरवाजा खोल, देख कौन है? सानिका ने अपने बेटे चिंटू को आवाज़ लगाई। चिंटु खेल रहा था, और वह अपनी सहकर्मी सहेली से फोन पर बतिया रही थी। देखो ना शाल्मली, हमारे लिये भी तो छुट्टियाँ हैं, हमारे लिये भी तो गर्मी है, मगर नहीं, घर में रहो , तो सारा दिन घर के कामों और इन बच्चों की धमाचौकड़ी में ही बीत जाता है। उपर से इन छुट्टियों में इस भीषण गर्मी और चुनाव की वजह से कहीं जाने का प्लान भी नहीं बना पाये। शाल्मली भी उसी की तरह एक टीचर थी। जाने उस तरफ से शाल्मली ने क्या कहा, मगर इधर चिंटू ने जोर से आवाज़ लगाई, मम्मी, सब्जी आई है।

फोन बंद करके साधिका बाहर आई, और गणेश के हाथ से थैला लेने लगी। गणेश की नज़रें अंदर खेल रहे चार - पाँच बच्चों पर पड़ी, जो लगभग उसी की उम्र के थे। वे चिंटू के दोस्त थे। वे सब टीवी स्क्रीन पर विडियो गेम खेल रहे थे। कार रेसिंग का गेम था, और सब बच्चे खिलखिला रहे थे, बतिया रहे थे, एक - दूसरे को ताली मार रहे थे.... और पास ही खाने- पीने की ढेर सारी चीज़ें, चिप्स, नमकीन, पूरियाँ, कटे हुए फल, आम, तरबूज और कुछ ठंडे पेय भी रखे थे , जिन्हें वे बीच - बीच में खाते - पीते जा रहे थे। कमरे में ए. सी. भी चल रहा था।

चिंटु गणेश को देख रहा था। थैला रखने और बिल के पैसे देने साधिका अंदर गई , तब तक गणेश गेम देखने में तल्लीन हो चुका था। साधिका पैसे लेकर बाहर आई, तो देखा, चिंटू उसका नाम पूछा रहा था। गणेश उसने जवाब दिया, तो चिंटू ने उससे कहा, गणेश, तू भी आ जा, आ, खेल हमारे साथ।

नहीं, माँ डांटेगी। गणेश बोला।

माँ नहीं डांटेगी साधिका ने उसे विश्वास दिलाते हुए कहा, मैं तुम्हारी माँ को फोन करके बता दूँगी कि तुम हमारे यहाँ हो, और बच्चों के साथ खेल रहे हो।

आ जाओ, मैं तुम्हें नाश्ता देती हूँ।

नाश्ता लाने के लिये किचन में जाते हुए साधिका ने संतोष की साँस ली, और वह खुशी से यह सोचकर मुस्कुरा दी, कि चाहे इन गर्मी की छुट्टियों में वे चिंटु को घुमाने - फिराने न ले जा पाये हों, मगर घर बैठे ही उसने संवेदना और मानवता का जो पाठ खुद ही सीख लिया था, वह उसके मनोविकास में बहुत बड़ा योगदान साबित होगा। इस पाठ ने उनके इस ग्रीष्मावकाश को सुखद अवकाश बना दिया था।

लघुकथा

नैतिक समर्थन

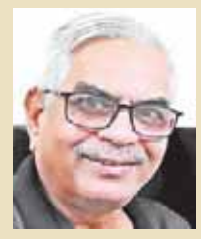

ब्रजेश कानूनगो

भाई साहब का विश्वास था कि मजबूत लोकतंत्र के लिए विपक्ष भी मजबूत होना चाहिए। इसी सोच के साथ सत्ताधारी दल की बजाए वे मुख्य विपक्षी पार्टी को ही हर बार अपना वोट देते रहे।

इस बार चुनाव के वक्त देश में घटी घटनाओं से वे काफी दुखी और निराश थे।

कुछ संसदीय क्षेत्रों में ऐसा दूषित वातावरण बना कि विपक्षी दल और निर्दलीय प्रत्याशियों ने एन मतदान के पहले ही अपने नाम वापिस ले लिए। इसके चलते कहीं सत्ताधारी पार्टी का उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हो गया तो कहीं एकतरफा मुकाबले से चुनाव का सारा आकर्षण और महत्व ही समाप्त हो गया। भाई साहब का क्षेत्र भी इसी राजनीतिक संकट का शिकार हो गया था।

भाई साहब, अब आप किसको वोट देंगे? आपके समर्थन वाली मुख्य राष्ट्रीय पार्टी के उम्मीदवार ने तो अंतिम समय पर अपना नामांकन ही वापिस ले लिया है। ऊपर से वह प्रमुख विरोधी पार्टी में जा मिला है। लड़ाई में अब कुछ वे निर्दलीय प्रत्याशी ही रह गए हैं जिन्होंने षड्यंत्र और दबावों के बावजूद अपने नाम वापिस नहीं लिए। मित्र ने पूछा।

बंधु, संसदीय चुनावों में यह घटना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। मतदाता ही नहीं इससे हमारा लोकतंत्र भी शर्मसार हुआ है। मतदान के लिए जरूरी समान लेवल फील्ड के अधिकार की अनिवार्यता का भी हनन हुआ है। लोकतंत्र में राजनीति कलंकित हुई है। वे बोले।

फिर भी भाई साहब वोट तो आपको डालना ही पड़ेगा। क्या करेंगे ? नोटा का भी एक विकल्प है मशीन में। विपक्षी दल ने नोटा का बटन दबाने का आग्रह भी किया है अपने अभियान में। मित्र भाई साहब के अगले कदम के प्रति उत्सुक था।

हां, चुनाव निर्विरोध तो शायद नहीं हो सकेगा। मुकाबला तो नोटा से भी हो सकता है। भाई साहब ने कहा।

ये तो है। विपक्ष तो पहले ही कमजोर है, जीतने वाला तो वैसे भी लाखों मतों के अंतर से जीतता लेकिन अब तो और अधिक वोटों से जीतेगा। शायद रिकॉर्ड भी बन जाएगा किंतु मुकाबला तो एकतरफा ही होगा। नोटा में डालना भी उसे विजयी होने से रोक नहीं सकता। हां यदि विपक्षी पार्टी का प्रतिद्वंदी मैदान में होता तो अवश्य ही उनका जीतना, हारना भी सम्मानजनक होता। मित्र ने कहा।

बंधु, मैं तो अपने तरीके से इस गलत प्रवृत्ति का विरोध करूंगा। भाई साहब ने बताया।

याने आप नोटा को वोट करेंगे? मित्र ने पूछा।

भाई साहब आगे कुछ बोले नहीं। मतदान वाले दिन एक निर्दलीय प्रत्याशी को वोट कर आए जिसने षड्यंत्रकारियों के नामांकन वापिस लेने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। जिससे चुनाव निर्विरोध नही हो पाया था। मतदाता के अधिकार को छीना नही जा सका था।

चुनाव परिणाम तो पहले से ही वे जानते थे, वर्तमान सांसद का बहुमत से जीत जाना निश्चित था किंतु भाई साहब के भीतर बड़ा संतोष था। मतदान के बाद लोकतांत्रिक प्रतिरोध का एक नैतिक नागरिक बोध उन्हे अधिक शक्ति और संबल प्रदान कर रहा था।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

भारतीय जनमानस के कलाकार राजा रवि वर्मा और उनकी कृतियाँ

कुछ समय पूर्व की बात है रामायण के फिर से दूरदर्शन पर शुरू होने के साथ ही राम के गुणों की चर्चा, राम के संस्कार, भाइयों के बीच का दर्शन, गुणों-अवगुणों पर तार्किक बहस जैसे एक बार फिर से दबा हुआ मर्म उजागिर हो गया है। रामायण से संस्कार ग्रहण कर चुकी एक पीढ़ी जो लगभग अपने उम्र के कई बसंत पार कर चुकी है, बच्चों के संस्कार को लेकर चिंतित थी, उनके बाद की वह पीढ़ी, नई पीढ़ी जो पाश्चात्यता के विचारों के साथ तैयार हुई, उसमें चाह कर भी वह संस्कार नहीं डाल पाए और आए दिन नए-नए मुद्दों को लेकर कुछ ऐसी फिल्में भी बनीं जो भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहीं। जहाँ बच्चे जब गर्मियों की छुट्टियों में अपने घर जाते हैं तो उन्हें यह कहते आसानी से सुना जा सकता है कि हम तो दादी के घर जा रहे हैं, जहाँ दादी बस मनोरंजन की एक चीज बनकर रह गई है, जहाँ दादा बच्चों के बिगड़ते रूपों को देखकर घर के एक कोने में दुबक कर बस रो लेते हैं और अपने बच्चों के संस्कार को लेकर चिंतित है ऐसे दौर में रामायण के शुरू होते ही अचानक से बड़े स्तर पर परिवर्तन देखने को मिला। यही परिवर्तन मिला था राजा रवि वर्मा के चित्रों, विशेषतः धार्मिक चित्रों को देखकर उस जमाने में जब ईश्वर की पहुँच मूर्त रूप से भारत के घर-घर में हो गया था रवि वर्मा के प्रेस में बने उनके अपने चित्रों के हजारों प्रतियों के रूप में।

अब हम कहें कि साहित्य और कला की प्रासंगिकता क्या है? क्या यह प्रश्न बचकाना नहीं लगता? जिस तरीके से लोग रामायण में पूरे जी-जान से अपने आप को प्रस्तुत कर देने वाले राम और सीता के रूप में अरुण गोविल तथा दीपिका को अपने भगवान के रूप में मानते हैं, उनके कदमों पर चलना चाहते हैं क्या सभी के जेहन में राम और सीता की यह तस्वीर नहीं बस गई है? आज लगभग सभी लोग राम और सीता को इसी रूप में पसंद कर रहे हैं इसी रूप में पूज रहे हैं। एक समय था जब राजपूत शैली, मुगल शैली अपने उद्देश्य को खो रही थी चित्रकार स्थिर होकर चित्रकारी नहीं कर पा रहे थे चित्र नहीं बना पा रहे थे कलाकारों को अपना जीवन यापन करना भी भारी पड़ रहा था, कला को लेकर अस्थिरता का माहौल व्याप्त था। भारतीय कला की स्थिति डाँवाडोल थी हालांकि मध्यकाल में, मुगल शैली में, कंपनी शैली में तथा और भी कई शैलियों में देवी-देवताओं चित्र बने, लेकिन उनमें ऐसे गुणों की कमी थी कि वे लोगों के दिलों में जगह बना पाते, उन सबों में लोक संस्कृति, स्थानीयता तथा बेडौलता की छाप नजर आती थी ऐसी कला नहीं मिल पा रही थी जो पूरे देश पर एक साथ अपना छाप छोड़ सके, उसी बीच आधुनिक कला में या कला के आधुनिक दौर में लोगों को देवी-देवताओं के एक नए रूप से परिचित करवाया गया। लोगों को देवी-देवताओं के सम्मोहक चित्रों से परिचित करवाने वाले कलाकार थे राजा रवि वर्मा। इनके द्वारा ही लीथोग्राफ प्रेस की स्थापना की गयी फलतः अधिक और सस्ते चित्रों का निर्माण होने से भारत के अधिकतर घरों में इनके चित्रों की पहुँच हुई, इनके चित्रों में लोगों को अपने भगवान नजर आये और उनकी पूजा भी हुई। अपने चित्रों के विषय और सजीवता के बल पर ही रवि वर्मा भारतीय जनमानस के दिलों पर राज करने लगे थे कहना गलत न होगा कि रवि वर्मा जन-जन के चित्रकार हो गये थे हालांकि विरोध हुआ, बहुत विरोध हुआ। अच्छे कार्यों का विरोध होता भी है विरोध होना ही अच्छाई का

परिचायक है उनका भी हुआ लेकिन वह हारे नहीं चलते रहे। कला समीक्षक फ्रैंक नोरिस का शब्द ÷जो कला अंत में लोगों द्वारा स्वीकृत नहीं होती वह जीवित नहीं रहती÷ सार्थक सा हुआ जान पड़ता है क्योंकि समीक्षकों द्वारा नकारे गये चित्रकार रवि वर्मा लोगों द्वारा स्वीकृत हुए फलतः उनकी कला आज भी जीवित है और हमेशा ही जीवित रहेगी।

समय शायद 1862 का रहा होगा बालक रविवर्मा के चाचा राजा वर्मा राज भवन की दीवारों पर तंजौर शैली में चित्र बना रहे थे अचानक उन्हें कुछ विशेष कारण से थोड़ी देर के लिए बाहर जाना पड़ा एकांत पाकर अंतस के प्रबल भावों के बल पर बालक रवि वर्मा जो मात्र 14 वर्ष का था बेखौफ, निडर हो चित्र में रंग भरना शुरू कर दिया साथ ही बचे हुए रेखा कार्यों को भी पूरा कर दिया जो एक आश्चर्य जनक बात थी।

भारतीय कला जगत में राजा रवि वर्मा, जो बचपन से ही सुन्दर सृजन के धनी हो गए थे, के प्रयासों को भुलाया नहीं जा सकता। रवि वर्मा जब मात्र 14 वर्ष के थे, चाचा के अनुपस्थिति में उनके द्वारा बनाए जा रहे चित्र में रंग भरते हुए बचे हुए रेखा कार्यों को भी पूरा कर गए थे जो एक आश्चर्य जनक बात थी। वापस आने पर चित्र देखते ही राजा वर्मा आश्चर्य से भाव विभोर हो उठे उनके मन में बालक रवि वर्मा को लेकर उम्मीदों का एक पहाड़ उभर आया और मन ही मन वो रवि वर्मा को भविष्य का महान चित्रकार मान बैठे जो आगे चलकर शत-प्रतिशत खरा सिद्ध हुआ। जिसके लिए उनके चाचा हमेशा ही रवि वर्मा के साथ खड़े रहे। उनके प्रयासों के बल पर ही इनको त्रावनकोर के महाराजा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ प्रतिफल ये हुआ कि दरबारी चित्रकार रामास्वामी नायडू द्वारा इन्हें जलरंग की बारीकियाँ समझने का मौका मिला। जल्द ही ये जलरंग में दक्षता हासिल करने में भी सफल रहे। कला के प्रति रवि वर्मा की ललक और तीव्र पकड़ को देखकर रामास्वामी नायडू तथा ब्रिटिश शबीह चित्रकार थियोडोर जॉनसन दोनों ने रवि वर्मा को तैल रंग में प्रशिक्षण देनें से साफ मना कर दिया। हाँ जॉनसन की तरफ से बस इतनी अनुमति थी कि पूर्ण हुए चित्र को बालक निहार सकता है उसका कथन था कि चित्र निर्माण प्रक्रिया के समय वो अपने आस-पास किसी को भी नहीं रहने देता ध्यान भंग की खाल ओढ़कर वो खुद को इस प्रक्रिया से अलग कर लिया था बावजूद इसके अधिकतर लोगों का मानना था कि रवि वर्मा को तैल रंग की शिक्षा थियोडोर जॉनसन से ही मिली। मामला संशयग्रस्त है।

जॉनसन ने खुद को बचाने का यह कदम ईर्ष्या बस उठाया या रवि वर्मा के आगे भविष्य में उसे अपनी जमीन खिसकती नजर आई इसलिए कह पाना मुश्किल है पर एक बात तो साफ है कि मुश्किल हालात के बाद ही खुशनुमा प्रभात का आनंद है अतः मुश्किल घड़ी में भी हाथ पैर मारना बंद नहीं करना चाहिए युवा रवि वर्मा ने भी यही किया और मालाबार स्कूल ऑफ पेंटिंग में भी दाखिला के प्रयास में जा लगे। यहाँ भी निराशा ही हाथ लगी। अब तक अपने अथक प्रयासों और लगातार निराश होने के चलते मानसिक रूप से कमजोर महसूस करने लगे थे रवि वर्मा पर चित्रकला में नवीन सृजन में निरंतरता बनी रही। इस बीच भी इनके चित्र लगातार बनते रहे और अथक प्रयास, एकाग्रचित मन के प्रयासों का फल तथा महाराजा के सहयोग से पाश्चात्य कला चित्रों पर प्राप्त कुछ चित्रकला संबंधित पुस्तकों के चित्रों को देखकर, गहन अध्ययन कर ये चित्रों की बारीकियों को पकड़ पाये और प्रयत्न के बल पर ही खुद एक संस्थान बन बैठे। देखते ही देखते इनके चित्र अंतरर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भी सराहे जाने लगे और स्वर्ण पदक हासिल करने में सफल रहे। स्थानीय शैलियों का भी उन्होंने अध्ययन किया, परिचित चेहरों में दिव्यता भर कर वही रूप देवी देवताओं के हेतु प्रयोग किया। उनके अधिकतर चित्रों में सुगंधा है, जिसको लेकर रवि वर्मा के बारे में तरह-तरह की बातें हवा हुई थी और जिसकी वजह से वर्मा जी को कई जगह घेरा भी गया। चित्र सीता हरण में उन्होंने सीता के रुप में अपने पोती की छवि को अंकित किया है।

कविता

कितने अच्छे इंसान पिता

नलिन खोईवाल

पूर्ण करें सब अरमान पिता
हम बच्चों के भगवान पिता ।
घर मंदिर है घर मस्जिद भी
माँ सावन तो रमजान पिता ।

ना कोई अस्तित्व हमारा
पूर्ण हमारी पहचान पिता ।
निर्धनता में जीवन जीते
हम बच्चों के धनवान पिता ।

खुद भूखे प्यासे रह जाते
हमें खिलाते पकवान पिता ।
सब कुछ न्योछावर कर देते
कितने हम पर कुरबान पिता ।

ख्वाब हमारे पूरे करते
खाक हो गए दरबान पिता ।
ज्यादा देर खफा ना रहते
घर-भर की है मुस्कान पिता ।

खुशियाँ हमको कितनी देते
खुद के गम से अनजान पिता ।
दुनिया भर के अपमान सहें
पर माँ का है अभिमान पिता ।

सबकी सुनते अपनी न कहें
कितने सदुण की खान पिता ।
सबका रखते हैं ध्यान विपुल
कितने अच्छे इंसान पिता ।

कमाल करते हैं बाबा

दिनकर वंदन करते बाबा
कलरव खग का सुनते बाबा
डाल विहग को दाना-पानी
फिर दफ्तर को जाते बाबा ।

सबसे अच्छे मेरे बाबा
सबसे प्यारे मेरे बाबा
झूठ कपट की इस दुनिया में
कितने सच्चे मेरे बाबा ।

मेहनत से न कभी घबराते
कर्म करना हमें सिखलाते
मुश्किलों से ना डरते कभी
हँसते-हँसते सब सह जाते ।

सपनों की दुनिया है बाबा
लाते प्यारी गुड़िया बाबा
उन सा ना कोई जग में
सारा जगत घूमिया बाबा ।

शाम को जब घर वापस आते
झोला भर कर सपनें लाते
हमको मुस्कुराता देख कर
वह अपने दुःख भूल जाते ।

गीत कविता वो बहुत लिखते
और पेपर में खूब छपते
नाम बहुत है जग में उनका
लोग सभी उनको कवि कहते ।

अपनी धुन में प्रसन्न रहते
नदी सरीखा निर्मल बहते
बाबा सुनते हैं सबकी पर
अपनी पीड़ा कभी न कहते ।

क्या-क्या कमाल करते बाबा
जीवन निहाल करते बाबा
हर मुश्किल और मुसीबत का
पल में निकाल करते बाबा ।

'फादर्स डे' पर विशेष

डॉ लोकेन्द्रसिंह कोट

पिता पर्याय है जीवन के

पिता वटवृक्ष हैं जिसकी गहरी, परिपक्व छांव में सब स्नेह के गूलर प्राप्त करते हैं। वटवृक्ष की तरह ही पिता की भी जटाएँ यत्र-तत्र लटकती रहती हैं, कहीं से भी चढ़कर उनका आलिंगन कर सकते हैं। हरदम हरे पत्ते कभी भी दुख के सूखे पत्तों को दिखने भी नहीं देते। पिता के रहते कब दुख आया और कब चला गया एहसास भी नहीं होता।

जैसे वटवृक्ष के एक गूलर में सैकड़ों वटवृक्ष की संभावनाएँ होती हैं इसी तरह पिता में भी बहुत संभावनाएँ होती हैं। पिता मां की अनुपस्थिति में मां भी बन जाते हैं तो अपनी बात जताने के लिए वे बहुत कम ही सामने आते हैं। वे अक्सर मां से कहते हैं कि उससे यह बोल देना। यह अप्रत्यक्ष व्यवहार उनकी गरिमा को और ऊँचा कर देता है। परिवार में आ रही किसी आर्थिक कमी को चेहरे पर नहीं

आने देने का भाव सिर्फ पिता के पास ही होता है। पिता अपनी संतानों की सीधे उनके सामने प्रशंसा करने से कतराते हैं लेकिन संतानों की अनुपस्थिति में वे उनके श्रेष्ठ कार्यों के लिए उतने मुखर होते हैं जैसे वह कार्य उन्होंने ही किया है।

पिता को न चाहते हुए भी नारियल की तरह होना होता है। ऊपर से सख्त तो अंदर से इतने नर्म कि सभी को समझ सके। जैसे नारियल का रेशा-रेशा काम आ जाता है वैसे ही पिता का भी कतरा-कतरा परिवार के काम आ जाता है। बाहरी दुनिया और उसकी समझ से पिता का अनुभव बहुत गहरा होता है और वे संतानों को विरासत में सबसे ज्यादा अनुभव ही देते हैं। एक ऐसी विरासत जिसका ऋण सिर्फ पिता बनकार ही उतारा जा सकता है। एक उम्र तक वात्सल्य, एक उम्र तक लाड़-प्यार, एक उम्र तक सिराहना, एक उम्र तक मूल्यों के शिक्षक और फिर जब बच्चों के और पिता के जूते एक साईज के हो जाते हैं तो एक श्रेष्ठ मित्र के रूप में खड़े मिलते हैं। घर आने में निर्धारित समय से थोड़ी देर हो जाने पर भी चार-पॉच बार बोल चुके होते हैं कि अभी तक नहीं आया। उनकी अपनी चिंताओं में संताने बेहद व्यस्त तरीके से शामिल होती हैं। अच्छे-बुरे के निर्णय में पिता अक्सर धृतराष्ट्र नहीं बनते हैं, उन्हे पता होता है कि स्वार्थ से श्रेष्ठ मनुष्य बनना संभव नहीं होगा। पिता दशरथ भी नहीं बनते उन्हें पता है कि किसी ओर के मंतव्यों का शिकार होकर संतान को दुविधा में नहीं डालना है। पिता हिरण्यकश्यप भी नहीं बनते हैं क्योंकि उन्हे पता है कि स्वयं की महत्वाकांक्षाओं का शिकार अपनी संतानों को नहीं बनाना है। पिता को प्रज्ञा स्वरूप आभास होता है कि उनकी संतान व्यवहारिक स्तर पर इस योग्य है और वे उसके लिए उसी तरह की पृष्ठभूमि का निर्माण करते हैं।

अक्सर पिता को देखा गया है कि वे परिवार के भरण-पोषण में इतने मशगुल होते हैं कि स्वयं के लिए कपड़े, जूते, चश्में का भान नहीं होता है। उन्हे लगता है कि परिवार ने अच्छे कपड़े-जूते पहन लिए तो उन्होने भी पहन लिए। जब ऑखों के बहुत पास ले जाकर समाचार पत्र पढते हैं तब कोई उन्हे टोकता है या पकड़ कर ले जाता है तभी वे चश्में को नया बनवाते हैं, वर्ना वे मुड़े-तुडे, पुराने से चश्में से काम चला रहे होते हैं। तिलांजलि की सही परिभाषा तो पिता ही होते हैं। घर में भी पिता बच्चों के पुराने मोबाइल, पुराने वाहन का उपयोग करते हुए पाए जाते हैं। नए जमाने की नई तकनीकों से अपरिचित कई पिता उन्हे सीखते नहीं है और बच्चों को बोल देते हैं उन्हे करने के लिए ताकि उनसे संचार बना रहे। बेटी के ब्याह में हुई कमियों को समधी से सुन कर उनसे क्षमा मांगते हुए, उन्हे खुद ही पचा जाते हैं किसी को भनक भी नहीं पड़ने देते हैं। उनकी पसंदीदा वस्तु चाहे वह खाने की हो या पहनने की, किसी अपने से पाकर वे एक छोटे से बच्चे की तरह दमक उठते हैं। अपने मित्रों में जाकर यह बताने से नहीं चूकते कि बड़ा वाला लाया है इसे फलां जगह से। अपनी संतानों को खुद घोड़ा बन कर घुमाने वाले पिता को रह-रह अपनी संतानों की शरारतें याद रहती हैं और फिर वे उसे अपने नाती-पोतों को खुश होकर सुनाते हैं। मंदिर में जब छोटे होने के कारण भगवान नहीं दिख पाते हैं, तो पिता ही होते थे जो हमे कांधे पर बैठाकर पहले घंटी बजवाते हैं और फिर भगवान के दर्शन करवाते हैं। हमें नहीं पता मंदिर में कौन सा भगवान है लेकिन इतना जरूर पता होता है कि जिसने हमें कंधे पर उठाया है वह भी किसी भगवान से कम नहीं है। एक पिता ही वह श्रेष्ठ मित्र होता है जो अपनी संतानों को अपने से बेहतर बनाना चाहता है। इसलिए कहा गया है, पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः । पितरि प्रितिमापन्ने सर्वाः प्रोणन्ति देवताः ।। भावार्थ है, ÷पिता स्वर्ग है, पिता धर्म है और पिता ही सर्वश्रेष्ठ तपस्या है । पिता के प्रसन्न होने पर सब देवता प्रसन्न हो जाते हैं ।÷

कलियुग में सबसे पवित्र है मोक्षदायिनी गंगा

गंगा दशहरा विशेष

योगेश कुमार गोयल

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

प्रतिवर्ष ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को 'गंगा दशहरा' पर्व मनाया जाता है, जो इस वर्ष 16 जून को है। दृक पंचांग के अनुसार ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि का आरंभ 16 जून को प्रातः 2 बजकर 32 मिनट पर हुआ है और 17 जून की सुबह 4 बजकर 45 मिनट पर समाप्त होगा, इसलिए उदया तिथि के अनुसार गंगा दशहरा 16 जून को मनाया जा रहा है। गंगा दशहरा पर इस वर्ष अमृत सिद्धि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, वरियान योग, रवि योग, चित्रा और हस्त नक्षत्र सहित कई अद्भुत संयोग का निर्माण हो रहा है। माना जा रहा है कि ऐसा संयोग करीब 100 वर्षों के बाद बन रहा है। इन शुभ योगों में स्नान करने से पुण्य का फल कई गुना बढ़ता है और कई पापों से मुक्ति मिलती है। 'गंगा दशहरा' मां गंगा के पृथ्वी पर अवतरण का दिन माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इसी दिन गंगा का धरती पर अवतरण हुआ था। चूंकि इस दिन गंगा स्नान, पूजन और दान-पुण्य के कार्यों का विशेष महत्व माना गया है, इसीलिए इस दिन वाराणसी, इलाहाबाद, गढ़मुक्तेश्वर, हरिद्वार और ऋषिकेश में गंगा स्नान करने लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते है। मान्यता है कि गंगा दशहरा के दिन गंगा में डुबकी लगाने से पापों से मुक्ति मिलती है। वाराणसी में तो इस अवसर पर अलग ही धूम देखने को मिलती है, जहां इस दिन दशाश्वमेध घाट की गंगा आरती देखने के लिए हजारों श्रद्धालु एकत्रित होते हैं।

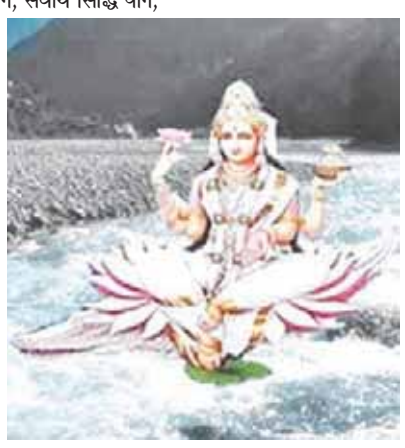

चूंकि गंगा नदी भगवान शिव की जटाओं के माध्यम से ही धरती पर आई थी, इसीलिए गंगा दशहरा के अवसर पर मां गंगा के साथ भगवान शिव की भी पूजा की जाती है। मान्यता है कि इस दिन भगवान भोलेनाथ और मां गंगा की पूजा करने से जीवन में सुख-समृद्धि और खुशहाली आती है तथा श्रद्धालु को जाने-अनजाने में हुए पापों से भी छुटकारा मिलता है। सदियों से मोक्ष दिलाने वाली मां गंगा को कलियुग में सबसे पवित्र माना गया है। पुराणों में यह उल्लेख मिलता है कि भगवान शिव ने अपनी जटा से गंगा को सात धाराओं में परिवर्तित कर दिया था। माना गया है कि मृत व्यक्ति का कल्याण तभी होता है, जब उसकी अस्थियां गंगा में प्रवाहित कर दी जाती हैं। गंगा में अस्थि-प्रवाह की यह परम्परा इक्ष्वाकुवंशी राजा सगर के पुत्रों की गाथा से उत्पन्न हुई मानी जाती है। रामायण, महाभारत और विष्णु पुराण में यह उल्लेख मिलता है कि राजा सगर के पुत्र महर्षि कपिल के क्रोध से भस्म हो गए थे, जिन्हें अयोध्या के इक्ष्वाकु वंशी राजा भगीरथ के अथक प्रयत्नों से स्वर्ग से नीचे लाई गई गंगा के जल में उनकी भस्म बहाने से मुक्ति मिली।

गंगा को पृथ्वी पर लाने का श्रेय महाराजा भगीरथ को ही है, जो अपने कठिन तप के बल पर अपने पूर्वजों के मोक्ष के लिए गंगा को धरती पर लाए थे। भगीरथ महाराजा दिलीप के पुत्र और महाराज अंशुमान के पौत्र थे। अंशुमान महाराज सगर के पुत्र थे। अंशुमान ने इक्ष्वाकु वंश के अपने पितरों को मोक्ष की जिम्मेदारी लेते हुए राज-पाट अपने पुत्र दिलीप को सौंप दिया था। इसके लिए उन्होंने घोर तपस्या करते हुए अपना शरीर त्याग दिया। उसके बाद महाराज दिलीप ने भी गंगा को धरती पर लाने के अथक प्रयास किए और रुग्णावस्था में स्वर्ग सिधार गए। तब महाराज भगीरथ ने प्रण लिया कि वह किसी भी स्थिति में गंगा को धरती पर लाएंगे और अपने पूर्वजों को मोक्ष दिलवाएंगे। उसके बाद वह गोकर्ण तीर्थ में जाकर घोर तपस्या में लीन हो गए। उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न ब्रह्माजी ने उनसे वर मांगने को कहा तो भगीरथ ने उनसे दो वरदान मांगे, पहला पितरों की मुक्ति के लिए गंगाजल और दूसरा कुल को आगे बढ़ाने वाला पुत्र। ब्रह्मदेव ने उन्हें दोनों वर दे दिए लेकिन साथ ही कहा कि गंगा का वेग इतना ज्यादा है कि पृथ्वी उसे संभाल नहीं पाएगी, इसलिए हे भगीरथ! धरती पर गंगा के अवतरण के लिए तुम्हें महादेव से सहायता मांगनी होगी।

भगीरथ ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए अपने पैर के अंगूठों पर खड़े होकर एक वर्ष तक कठोर तपस्या की, जिसके बाद महादेव ने प्रसन्न होकर गंगा को अपने मस्तक पर धारण कर लिया और इसी के साथ गंगा का अभिमान भी तोड़ा। दरअसल गंगा को अपने वेग पर बहुत अभिमान था और गंगा का सोचना था कि उनके वेग से शिव पाताल में पहुंच जाएंगे। जब शिव को गंगा के इस अभिमान का पता चला तो उन्होंने गंगा को अपनी जटाओं में ऐसे समा लिया कि उन्हें वर्षों तक शिव-जटाओं से निकलने का मार्ग ही नहीं मिला। भगीरथ अपने पितरों को मोक्ष प्रदान करने के लिए गंगा को पृथ्वी पर ले जाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने फिर भगवान शिव की तपस्या की। उनके तप से प्रसन्न होकर शिव ने गंगा को बिंदुसर की ओर छोड़ा, जहां से गंगा सात धाराओं के रूप में प्रवाहित हुई और सातवीं धारा ने राजा भगीरथ का अनुसरण किया। भगीरथ के पीछे चलते-चलते गंगा समुद्र तट तक पहुंच गई। यहां से भगीरथ गंगा को कपिल मुनि के आश्रम ले गए और अपने पितरों की भस्म को गंगा के स्पर्श से मोक्ष दिलवाया।

'फादर्स डे' पर विशेष

मनोज कुमार

बाजार के फादर्स डे का 'तर्पण'

बाजार ने अपने लाभ के लिए रिश्तों का बाजार खोल दिया है. अभी माँ के लिए मदर्स डे मनाया भी नहीं था कि पिता को बाजार के हवाले कर 'फादर्स डे' ले आया गया. हम भारतीय परिवारों में रिश्तों का गांभीर्य है और मिठास भी लेकिन बाजार इसे सिर्फ बेचना जानता है. लोगों को इस बात की शिकायत है कि कांवेंट शिक्षा ने पिता या बाबूजी को पापा से पॉप्स तक ले आयी है लेकिन यही लोग 'फादर्स डे' पर उछल-कूद मचाने से बाज नहीं आते हैं. बाजार बताता है कि पॉप्स का बच्चों की जिंदगी में क्या महत्व है? बाजार बताता है कि पिता के पैसों से पॉप्स के लिए मँहगे उपहार खरीद कर उन्हें खुश करो और 'फादर्स डे' सेलिब्रेट करो. आपके पॉप्स कितना खुश होते हैं, ये तो वही जाने लेकिन बाजार जरूर मुस्करा उठता है. लाखों-करोड़ों का व्यापार हो जाता है।

'फादर्स डे' सेलिब्रेट करना बाजार ने सिखाया है लेकिन हमारी भारतीय परम्परा 'फादर्स डे' ना मनाकर तर्पण करती है. पिता जीते जी बच्चों के लिए आइडियल रहता है तो मृत्यु के पश्चात भी उसका आइकॉन बना रहता है. पिता की मृत्यु का अर्थ परिवार पर मुसीबत का टूट पडना है. पिता को मोक्ष प्राप्त हो इसके लिए सनातनकाल से तर्पण का संस्कार किया जाता है. तर्पण का अर्थ है कि आप देव के हो गए और उसी शान के साथ वहां रहें जैसा कि आप अपने परिवार के बीच में थे. तर्पण सेलिब्रेशन का संस्कार नहीं है बल्कि तर्पण आंखों में आने वाले आंसुओं का नाम है. पिता का साया जब बच्चे के सिर से उठता है तो उसकी पीड़ा वही जान पाता है. पिता के साथ रूठना-मनाना, जिद्द करना उसकी आदत में शुमार होता है. फटी बनियान पहने और फटे जूतों के बीच पिता जीते-जी अपने बच्चों की बेहतरी का सपना बुनता है. खुद के पेट में दो निवाला ना हो लेकिन बच्चों को भूखा देख पिता जीते-जी मरने की अवस्था में आ जाता है।

पिता से यह संस्कार बच्चों को अपरोक्ष रूप से हस्तांतरित हो जाते हैं. पुत्र पिता की छाया होते हैं और बेटियां पिता का गुरूर. दोनों ही मिलकर परिवार को छांह देते हैं और पिता को बारंबार याद करते हैं. आज पिता होते तो क्या होता, आज पिता साथ होते तो वो होता. दीपावली, दशहरे पर पिता की याद सहसा परिवार वालों को भीतर तक रूला देती है. मृत्यु के बाद अनेक संस्कार होते हैं लेकिन भारतीय परिवार इन संस्कारों को जीवन के अंतिम सांस तक पूरा करते हैं. यही कारण है कि साल में एक दिन उनका नाम होता है जिसे हम पितृ मोक्ष कहते हैं. पिता की मोक्ष की कामना के साथ ईश्वर की आराधना और उनके श्रीयश के लिए कामना।

भारतीय पिता को ना पॉप्स कहलाने का शौक है और ना ही 'फादर्स डे' मनाने का रिवाका. बाजार अपने लाभ के लिए लोगों का मानस बदल देता है. हमारे समाज से बाबूजी और पिताजी शब्द को जिस तरह विलोपित किया गया और पापा, पॉप्स ने जगह पायी तो बाजार को घुसपैठ करने में आसानी हो गई. बाजार ने तर्पण को 'फादर्स डे' में बदल दिया और विभिन्न उपहारों से पॉप्स को खुशी देने के लिए प्रेरित करने लगा. यही हाल माँ से मॉम का भी है. बाजार ने उनके लिए भी दरवाजे खोल दिए हैं. माँ की गोद में सिर रखकर सो जाने का मतलब जीते-जागते स्वर्ग सा सुख पाना है तो जींस पहनी मॉम के पास इसके लिए वक्त कहां? और यहीं से बाजार ने घुसपैठ कर लिया. भारतीय समाज में सनातनी परम्परा के अनुरूप श्राद्धपक्ष में किसी प्रकार का मंगल कार्य कर सकते हैं और ना ही कोई नयी चीज की खरीददारी. ऐसे में बाजार खामोश हो जाता है और उसे लाखों का नुकसान होता है. बाजार तो बिकने और खरीदने के लिए बना है सो उसने इसका भी रास्ता निकाल लिया. कहा जाने लगा कि श्राद्धपक्ष में अमुक दिन उत्तम होता है और खरीददारी किया जाना चाहिए. बाजार अपनी चाल में कामयाब हो गया और कड़वे दिन में भी बाजार गुलजार होने लगा. हम अपनी परम्पराओं को तिलांजलि देकर खुद को बाजार के हवाले कर दिया. हम बाजार के इशारों पर नाचने लगे. बड़ी कम्पनियों में मोटी तनख्वाह पर नौकरी कर हम खुद को नई रइसजादों की भीड़ में शामिल कर लिया. अब हमारे लिए रिश्ते, परम्परा और जीवनशैली का मतलब है पैसे खर्च करना. अजीब विडम्बना है कि जिस पिता ने अपने खून-पसीने की कमाई से बच्चों को बड़ा किया, आज वही बच्चे महंगे उपहार देकर एक तरह से पिता को आईना दिखा रहे हैं. बाजार ने इस कमजोरी को पकड़ लिया और हर दिन सेलिब्रेशन का हो गया. आइए हम सब बाजार के 'फादर्स डे' का तर्पण करें।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर का अग्रवाल समाज ने किया भव्य स्वागत

धार। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री एवं धार - महू लोकसभा सांसद सावित्री ठाकुर के धार प्रथम आगमन पर अग्रवाल समाज, धार द्वारा अग्रवाल समाज धार के महामंत्री नवीन गर्ग के नेतृत्व में समाजजनों एवं पदाधिकारियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर का समाजसेवी नवीन गर्ग एवं गर्ग परिवार ने किया भव्य स्वागत

धार। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री एवं धार - महू लोकसभा सांसद सावित्री ठाकुर के मंत्री बनने के पश्चात धार प्रथम आगमन पर अनेक स्थानों पर भव्य स्वागत हुआ. इसी कड़ी में समाजसेवी नवीन गर्ग के निवास पर सावित्री ठाकुर का गर्ग परिवारजनों द्वारा भव्य स्वागत किया गया. इस अवसर पर सर्व ब्राह्मण समाज के जिला कार्यकारी अध्यक्ष धर्मेन्द्र जोशी भी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय पत्रकार कल्याण परिषद ने किया केंद्रीय राज्यमंत्री का स्वागत-सम्मान

पत्रकारों के हित में यथासंभव सहयोग करने का दिया आश्वासन

बैतूल। बैतूल-हरदा-हरसूद लोकसभा क्षेत्र से लगातार दूसरी बार रिकार्ड मतों से निर्वाचित हुए क्षेत्रीय सांसद दुर्गादास (डी.डी.) उईके, गत दिवस केंद्रीय मंत्रिमंडल के गठन में केंद्रीय राज्य मंत्री (जनजाति कार्य मंत्रालय) बनाए जाने के बाद प्रथम गृह नगर बैतूल आगमन पर उनका जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय पत्रकार कल्याण परिषद की जिला इकाई बैतूल के संभागीय प्रभारी वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम सिन्हा एवं परिषद के महासचिव वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी सहित अन्य पत्रकार साथियों द्वारा उन्हे पुष्प गुच्छ तथा शाल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय राज्यमंत्री श्री उईके ने बड़ी संख्या में उपस्थित पत्रकारों को आश्वस्त करते हुए कहा कि वे पत्रकारों के हित के विषय में वह यथासंभव सहयोग करते रहेंगे। इस अवसर पर उपस्थित राष्ट्रीय पत्रकार कल्याण परिषद के सदस्यों ने मध्यप्रदेश में पत्रकार सुरक्षा गारंटी कानून लागू करने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री से चर्चा कर सहयोग करने के लिए उनसे विशेष आग्रह किया।

केंद्रीय राज्यमंत्री बनाए जाने बाद प्रथम गृह जिला आगमन पर सांसद डीडी उइके का हुआ कई स्थानों पर स्वागत

जगह-जगह हुई पुष्प वर्षा, क्षेत्र में बंटे मिष्ठान

बैतूल/मुलताई- मोदी के केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल हुए केंद्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद डीडी उईके के मुलताई नगर आगमन पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका जगह-जगह भव्य स्वागत किया। मोदी के केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होने के बाद प्रथम बार नेशनल हाईवे मार्ग से नागपुर से मुलताई आने की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता खंबारा टोल पर जमा हुए। जहां जनपद सदस्यों एवं जिला पंचायत सदस्य सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने केंद्रीय राज्यमंत्री डीडी उइके का पुष्प माला से स्वागत किया, जगह-जगह पुष्प वर्षा की गई। खंबारा टोल से मुलताई की सीमा तक कई स्थानों पर बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता स्वागत के लिए जमा रहे। सांसद ने प्रत्येक स्थान पर उतरकर सभी कार्यकर्ताओं का स्वागत-सत्कार दिल से स्वीकार किया। इसके बाद मंत्री का काफिला नगर की सीमा से लगे ग्राम पंचायत कामथ पहुंचा, जहां भाजपा नेता नमन अग्रवाल, भाजपा अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के जिला कोषाध्यक्ष जाफर पटेल, जीतू डहारे, कामथ सरपंच रामदास साहू, पन्ना साहू सहित बड़ी संख्या में जनपद सदस्य, जिला पंचायत सदस्य एवं सरपंचों ने उनका स्वागत कर मिष्ठान वितरण किए। उल्लेखनीय है कि बैतूल-हरदा लोकसभा चुनाव में भाजपा को रिकॉर्ड मतों की लीड मिली है जो की लोकसभा की 6 विधानसभा में सर्वाधिक है। 2019 लोकसभा चुनाव में भी भाजपा को मुलताई विधानसभा ने सातों विधानसभा में सर्वाधिक 60 हजार से अधिक मतों की लीड से जिताया था, यही कारण है कि मंत्री बनने के बाद मुलताई क्षेत्र की जनता को उनसे बड़ी उम्मीदे है। माना जा रहा है कि मुलताई क्षेत्र विशेष तौर से अब ताप्ती के सर्वांगीण विकास के मार्ग खुल सकेंगे। यही कारण है कि मुलताई क्षेत्र में सांसद के मंत्री बनने के बाद भारी उत्साह का माहौल है।

पहली बारिश में जलमग्न हुआ प्रमंडल रेलवे अंडर ब्रिज

50 से अधिक ग्रामों का संपर्क बाधित

ग्रामीणों ने कहा, अंडर ब्रिज का कार्य अधूरा, फिर भी बंद कर दिया गेट

बैतूल/मुलताई- भोपाल नागपुर रेलवे लाइन पर मुलताई के ग्राम प्रमंडल रेलवे गेट के लिए बनाया गया अंडर ब्रिज पहली बारिश में ही जलमग्न हो गया है। जिससे परमंडल सर्रा, हेटी सहीत इस मार्ग से जुड़े 50 ग्रामों का आवागमन बाधित हो रहा है। अंडर ब्रिज में पानी भरा होने से सुबह से अनेक दुर्घटनाएं हो रही है जिससे ग्रामीणो मे भारी रोष है। ग्रामीणों को कहना है कि मध्य रेलवे द्वारा प्रमंडल अंडर ब्रिज का कार्य जिस ठेकेदार को दिया गया था

उसने पहले अंडर ब्रिज का कार्य पूर्ण करना था उसके बाद रेलवे गेट को पूरी तरह से बंद करना था। ठेकेदार ने समय अवधि में कार्य पूर्ण बताने के लिए प्रमंडल रेलवे गेट को हमेशा के लिए बंद कर दिया गया और दूसरी ओर अंडर ब्रिज का कार्य अधूरा छोड़ दिया जिसका खामीयाजा इस रेलवे गेट से प्रभावित होने वाले 50 से अधिक ग्रामों के ग्रामीणों को भुगतना पड़ रहा है।जब पिछले दिनों अंडर ब्रिज का कार्य पूरा किए बगैर ठेकेदार द्वारा रेलवे गेट हमेशा के लिए बंद किया जा रहा था ग्रामीणों ने इसका विरोध भी किया था किंतु रेलवे प्रशासन ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। कल हुई वर्षा के बाद इस अंडर ब्रिज में 4 फीट से अधिक पानी भर गया है जिस ठेकेदार द्वारा पानी की मोटर पंप से खाली करने का प्रयास किया जा रहा है जो अभी तक नहीं निकल सका है।

क्या कहते हैं ग्रामीण- जलमग्न हुए रेलवे अंडर ब्रिज की समस्या से जूझ रहे लोगों से हमने चर्चा की प्रमंडल निवासी गौरीत हारोडे बताते हैं कि बगैर अंडर ब्रिज का काम पूरा करें बगैर रेलवे गेट बंद कर दिया। वर्षा होने से पुलिया जलमग्न हो गई 50 ग्राम का संपर्क मुलताई से टूट गया। सुबह से दुर्घटना हो रही है 10 घंटे पूरी तरह से मार्ग बंद रहा ।जब थोड़ा पानी कम हुआ तो लोग इसमें से दो पहिया चार पहिया वाहन निकाल रहे हैं जिससे सुबह से 25 गाड़ियों इंजन में पानी भर जाने से खराब हो रहे हैं। प्रमंडल निवासी द्वारका बोरबन बताती है कि पलिया में कमर कमर पानी है महिलाएं इसमें गिर रही है ।रेलवे गेट बंद कर दिया है पहले फाटक खोलना चाहिए फिर अंडर कार्य पूरा करना चाहिए। कमलेश भादे, रमेश बोरबन, नारायण नरवरे ग्राम शर्रा , बंटी पवार बताते हैं कि क्षेत्र मे तेज बारिश के चलते अंडर ब्रिज में 4 फीट तक पानी भर गया है जिसे खाली करने के लिए रेलवे विभाग ने एक छोटा सा मोटर पंप लगा दिया है पानी जितना खाली करते हैं उतना ही फिर आ जा रहा है ऐसे में समस्या का समाधान होना संभव नहीं है।

जेएच कालेज में प्रोफेसर के साथ मारपीट करने वाले आरोपीयो को 24 घंटे के अन्दर किया गिरफ्तार

जेएच कालेज में रॉड, हॉकी और लाठी से की थी पिटाई, कालेज परिसर असुरक्षित, आए दिन घटित होती है घटनाएं

बैतूल। जेएच कालेज बैतूल में पदस्थ प्रोफेसर नीरज धाकड के साथ अन्नू ठाकुर व उसके पाँच साथियों के व्दारा राड, पाईप से मारपीट करने की सूचना पर गंज पुलिस के व्दारा मौके पर पहुँचकर घटना स्थल सुरक्षित करते हुये घायल प्रोफेसर को ईलाज हेतु जिला अस्पताल पहुँचाया व तत्काल अपराध पंजीबद्ध कर घटना घटित करने वाले आरोपियों की धरपकड़ करने हेतु टीम रवाना की गयी। पुलिस अधीक्षक द्वारा जिला अस्पताल बैतूल जाकर घायल के हाल चाल की जानकारी ली व चिकित्सको से घायल प्रोफेसर के बेहतर इलाज के लिये निर्देश दिये गए। जिला अस्पताल में ही घायल प्रोफेसर नीरज धाकड़ की रिपोर्ट पर आरोपी अन्नू ठाकुर व अन्य 05 आरोपियों के विरुध्द थाना गंज में अपराध क्रमांक 236, 2024 धारा 307, 353, 333, 147, 148, 506 भादवि का पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया।

प्रोफेसर के साथ हुई घटना की गंभीरता को देखते हुये फरार आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक व्दारा अनुविभागीय अधिकारी सुश्री शालिनी परस्ते के अधीनस्थ थाना गंज व थाना कोतवाली के टीम गठित की जाकर आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु टीमें तत्काल रवाना की गई। गठित पुलिस टीम के व्दारा 24 घण्टे के अंदर समस्त आरोपियों के घर, रिश्तेदारों, रेल्वे स्टेशन, बसों के साथ साथ इटारसी, आमला, भोपाल एवं अन्य संभावित स्थानों में दबिश दी गई। फलस्वरुप गठित टीमों के व्दारा मुख्य आरोपी अन्नू उर्फ अनिकेत ठाकुर, हेमन्त यदुवंशी, शिवम सोलंकी, कुनाल चड़ोकार, लक्की चौहान व एक विधि विरुध्द बालक को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों से घटना के संबंध में पूछताछ की जाकर घटना मे प्रयुक्त रॉड पाइप इत्यादि जप्त किया जा रहा है। उक्त मामले के आरोपियों के अपराधिक रिकार्ड के अनुसार भी पृथक से जिला बदर आदि की कार्यवाही भी की जावेगी।

उक्त घटनाक्रम के संदर्भ में पुलिस अधीक्षक द्वारा शनिवार कॉलेज की प्राचार्य के साथ सभी प्राध्यापक गणों की बैठक सुरक्षा संबंधित मुद्दे पर ली गई तथा तदनुसार निर्देश दिये गये। पुलिस द्वारा आरोपियो को गिरफ्तार किया गया जिसमें अनिकेत उर्फ अन्नू ठाकुर उम्र 27 साल, निवासी राजेन्द्र वार्ड गंज, हेमन्त यदुवंशी उम्र 18 साल, शिवम सोलंकी उम्र 24 साल, कुनाल चड़ोकार उम्र 20 साल, लक्की चौहान उम्र 19 साल, विधिविरुध्द बालक को गिरफ्तार किया गया। उक्त अपराध के आरोपियों की गिरफ्तारी में अनु.अधिकारी पुलिस बैतूल सुश्री शालिनी परस्ते, निरी. रविकांत डेहरिया थाना प्रभारी गंज, निरी. देवकरण डेहरिया थाना प्रभारी कोतवाली, उपनिरी. वंशज श्रीवास्तव, सउनि. किशोरीलाल सल्लाम, सउनि. जीपी बिल्लोरे, प्रआर. संदीप इमना, प्रआर. मयूर, आर. अनिरुध्द, आर. नवीन रघुवंशी आर. दुर्गेश, आर. दीपेन्द्र आर नरेन्द्र आर मनोज के व्दारा सराहनीय कार्य किया गया है।

श्री सिद्धी विनायक गणेश मंदिर में सावित्री ठाकुर ने केंद्र में मंत्री पद प्राप्त करने पूजा अर्चना कर आशीर्वाद ग्रहण किया

धार। एल आई जी कॉलोनी स्थित श्री सिद्धी विनायक गणेश मंदिर में सावित्री ठाकुर ने केंद्र में मंत्री पद प्राप्त करने के बाद धार नगर आगमन पर श्री गणेश जी की पूजा अर्चना कर आशीर्वाद ग्रहण किया. श्री सिद्धी विनायक गणेश मंदिर में पंडित गोटू शुक्ला ने केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर से पूजा अर्चना संपन्न कराई।

केंद्रीय मंत्री डीडी उईके के जुलुस में खूब कटी जेब, कई नेताओं के पर्स पर किए गए हाथ साफ

बैतूल। केंद्रीय राज्यमंत्री बनने के बाद पहली बार बैतूल पहुंचे सांसद डीडी उइके के स्वागत जुलूस में शुक्रवार जेब कतरो की खूब पौ बारह हुई। जुलूस में उन लोगो को बड़ी चपत लगी। जिनके जेबों में रखे पर्स पर बदमाशो ने हाथ साफ कर दिए। पुलिस ऐसे जेब कतरो को ढूंढती रही लेकिन कोई हाथ नहीं आया। हालाकि कोतवाली पुलिस ने दो संदिग्धों को पूछताछ के लिए बैठा लिया है। जबकि सीएम के मुल्ताई कार्यक्रम में भी लोगो की जेबों पर सेंधमारी हुई। डीडी उईके के जुलूस में सबसे ज्यादा पर्स चोरी करने की घटना कारगिल चौक पर हुई। यहां मिले भाजपा नेता और पूर्व पार्षद सतीश बढोनिया और सारीक खान के जेब से किसी ने पर्स मार दिया। गनीमत यह रही की उसमें ज्यादा रकम नहीं था। जेब कतरो ने पर्स से रूपए निकालकर उन्हे मौके पर ही फेंक दिया। यह पर्स बडोनिया को पास में ही पड़ा मिल गया। ऐसी ही घटना भाजपा अल्पसंख्यक नेता सारिक खान के साथ भी हुई। चोर उनका भी पर्स चुरा ले गए। लेकिन रकम निकालकर पर्स फेंक दिया। उन्होंने बताया की अधिकांश पर्स कारगिल चौक पर ही चोरी हुए। जबकि एक भाजपा नेता का पर्स मुलताई में चोरी हुआ। एक राजा नाम के व्यक्ति को भी कारगिल चौक पर चपत लगी। सारिक खान ने इस मामले में कोतवाली थाने में लिखित शिकायत भी की है। उनके पर्स में साढ़े आठ हजार से ज्यादा की रकम चोरी हुई। बताया जा रहा है की जुलूस में ऐसे करीब एक दर्जन लोगो के साथ यही घटना हुई। हालाकि इसकी जानकारी जैसे ही कोतवाली टी आई देवकरण डहरिया को मिली वे जुलूस में संदिग्धों को तलाश करते रहे। इस दौरान कारगिल चौक से ही दो युवकों को संदेह के आधार पर पकड़कर कोतवाली ले जाया गया। उन्होंने बताया की वे जुलूस में संदेहियो को तलाश रहे है।

याद तुम्हारी आ जाती है कार्यक्रम में नम आंखों से याद किए गए विनोद जी..

नर्मदापुरम। और धीरे धीरे 365 दिन पलक झपकते ही खत्म हो गये, आज से ठीक 365 दिन पूर्व अचानक हम सभी के बीच से हमारा एक प्रिय नायक पसंदीदा नव गीतकार जिनकी बाराबंकी में लिखी गई नब्ज़ आज भी प्रासंगिक उस मायने में सटीक बैठती है जब हम उस शख्स की यादें उस जगह मनाने को एकत्रित थे। जो आज के दिन भी नगर की सबसे विवादास्पद और चर्चित प्रशासनिक महकमे को मुंह चिढ़ाता सभागार है। सप्त मित्र समूह द्वारा आज अपने सबसे प्रिय मित्र स्व विनोद निगम को नम आंखों से श्रद्धांजलि अर्पित कर उन्हें याद कर रहा था, आज से ठीक 365 दिन पहले वे अचानक अपने मित्र समूह को छोड़ इस भौतिक दुनिया से अलविदा कह गए थे। विनोद जी की मौत की खबर सुनकर अभिन्न मित्र गोपीकांत घोष जो उस दिन खुद अमृत हास्पिटिल में स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे, शरीर में लगी बोतल की सुई अपने से निकाल एक ओर कर विनोद जी को देखने पाण्डेय नर्सिंग होम की ओर प्रस्थान करते हैं,

तो वहां विनोद जी के दूसरे साथी कमलेश सक्सेना दिशा शून्य स्थित में क्या किया जाए नर्सिंग होम में विषम परिस्थितियों का सामना कर रहे थे। खैर भौतिक जीवन नश्वर है, जो आया है उसे जाना है इस शाश्वत सत्य को स्वीकारने में करने में बड़ा ही कष्ट होता है बस एक दो को नहीं बाकी कुछ पलों के लिए तो सभी स्तब्ध रह जातें हैं। विनोद जी ने अपनी जिन्दगी बहुत ही खूबसूरत और जिंदा दिली से जीया था। उनके मित्रों में शामिल राष्ट्रीय कवि सुरेश उपाध्याय थे तो जन प्रतिनिधियों में रामेश्वर नीखरा, भवानी शंकर शर्मा, विजय दुबे काकू भाई अजीत थे, मोहन जमनानी से मानो रोज शाम मुलाकात करने का ठिकाना, उधर प्रशांत दुबे उर्फ मुन्नू से धनिष्ठा की कमी नहीं, फिर सप्त मित्र समूह का कहना ही कुछ और जो एक फिल्मी गाने की पंक्तियां जहां चार यार मिल जाए वही रात हो गुलजार इनकी आत्मीयता को सार्थक साबित करती वह सब बीते दिनों की बात हो गई आज उन्हें याद करते हुए सभी की आंखें नम थी सच विनोद जी ने अपनों के बीच बहुत ही अपनापन पाया उनसे बिछुड़ने के एक साल बाद उन्हें याद करने एकत्रित हुए जनों ने उन्हें अपने बीच नहीं पाकर उन्हें अपने बीच महसूस किया। आज के कार्यक्रम की सूत्रधार श्रीमती हंसा व्यास थी और कार्यक्रम को ऊंचाई देने के लिए सप्तम मित्र मंडली...।

6 साल बाद फिर लौट आई है 'स्त्री'

श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की फिल्म 'स्त्री 2' का टीजर रिलीज हो गया। 'स्त्री 2' साल 2018 में रिलीज हुई फिल्म 'स्त्री' का सीक्वल है। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट हुई थी। हालांकि फिल्म के आखिर में मेकर्स ने एक सस्पेंस छोड़ दिया था, जिसके बाद दर्शक बड़ी ही बेसब्री से 'स्त्री 2' का इंतजार कर रहे थे। अब फैंस का इंतजार खत्म होने वाला है। यह फिल्म दिवाली के मौके पर रिलीज होगी। इससे पहले मेकर्स ने फिल्म का टीजर रिलीज कर दिया है, जिसमें श्रद्धा कपूर चुड़ैल बनकर लोगों को डराती नजर आ रही हैं।

श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की फिल्म 'स्त्री 2' की टीजर फिल्म 'मुंज्या' के साथ सिनेमाघरों में रिलीज हुआ। लेकिन सिनेमाघरों में रिलीज होते ही यह टीजर ऑनलाइन लीक भी हो गया। एक यूजर ने 'स्त्री 2' का वीडियो अपने ट्विटर हैंडल पर शेयर किया है। इस वीडियो की शुरुआत में लिखा है, 'द लीजेंड इज बैक' तभी राजकुमार राव बोलते हैं, 'ये तो आ गई सच में।'

'स्त्री 2' के इस टीजर में राजकुमार राव और पंकज त्रिपाठी के साथ अपार शक्ति खुराना और अभिषेक बनर्जी भी नजर आ रहे हैं। 'स्त्री 2' की कहानी उसी गांव से शुरू हुई थी, जहां पर इसका अंत हुआ था। वीडियो में देखा जा सकता है कि स्त्री गांव में वापस लौटकर आ गई है और साथ ही श्रद्धा कपूर की एंट्री भी हो गई। इस फिल्म के टीजर में एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया स्पेशल डांस नंबर करती नजर आ रही हैं। वीडियो में राजकुमार राव भूत से कह रहे हैं 'हमने आपकी चोटी काट दी थी, अगर आप तेल की मसाज करोगी न तो वो दोबारा आ जाएगी।' स्त्री 2 के इस वीडियो पर लोग खूब कमेंट कर रहे हैं।

50 की उम्र में रोमांटिक रोल में तब्बू

अजय देवगन और तब्बू की जोड़ी दर्शकों को खूब पसंद आती है। अब जल्द ही यह दोनों फिल्म 'औरों में कहां दम था' में रोमांस करते नजर आएंगे। नीरज पांडे के निर्देशन में बनी यह रोमांटिक म्यूजिकल फिल्म है, जिसमें अजय देवगन और तब्बू के अलावा एक्ट्रेस शांतनु माहेश्वरी, साई मांजरेकर और जिमी शेरगिल लीड रोल में नजर आएंगे। इस फिल्म का ट्रेलर रिलीज हुआ, जो काफी पसंद आ रहा है। ट्रेलर लॉन्च के दौरान अजय देवगन और तब्बू ने 50 की उम्र में रोमांस और लव स्टोरीज को लेकर अपने विचार साझा किए।

एक्ट्रेस तब्बू ने 50 की उम्र में रोमांस करने को लेकर कहा कि रोमांस केवल युवाओं या फिर एक निश्चित आयु वर्ग तक ही सीमित नहीं है। मुझे नहीं लगता है कि जब आप रोमांस, प्यार और रिश्तों के बारे में बात करते हैं तो कोई बाधा होती है। वास्तव में मुझे लगता है कि कोई भी फिल्म प्यार और रोमांस से ज्यादा एक रिलेशनशिप के बारे में है और मानवीय रिश्ते सबसे दिलचस्प चीज है, जो सिनेमा को मिली। तब्बू ने आगे कहा कि रिश्तों को कहां से कहां तक ले जाया जाए उसका कोई अंत नहीं है। साथ ही प्यार और रोमांस मानवीय रिश्तों का हिस्सा हैं।

'औरों में दम कहां था' के ट्रेलर लॉन्च पर एक्टर अजय देवगन ने कहा कि प्यार और भावनाएं समय के साथ और भी ज्यादा गहरी होती चली जाती हैं। नीरज पांडे के निर्देशन में बनी फिल्म 'औरों में कहां दम था' में 2002 से 2023 के बीच की प्रेम कहानी को दर्शाया जाएगा, जिसमें अजय देवगन और तब्बू के यंग रोल में शांतनु माहेश्वरी और साई मांजरेकर नजर आएंगे। इस फिल्म में एक्टर जिमी शेरगिल भी मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। यह तब्बू और अजय देवगन की साथ में 10वीं फिल्म है। इससे पहले अजय देवगन और तब्बू 'भोला, दृश्यम' जैसी फिल्मों में साथ नजर आ चुके हैं।

फिर पाकिस्तान की ईंट से ईंट बजाएंगे सनी

बॉलीवुड एक्टर सनी देओल की फिल्म 'गदर 2' ने पिछले साल बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई की थी। इस फिल्म की सफलता के बाद अब सनी देओल ने फिल्म 'बॉर्डर' के सीक्वल की अनाउंसमेंट कर दी है। फिल्म 'बॉर्डर' 1997 में रिलीज हुई थी, जिसमें सनी देओल एक फौजी के रोल में नजर आए थे। इस फिल्म ने दर्शकों के दिलों को छू लिया था। ऐसे में अब सनी देओल ने फैंस को बड़ा तोहफा देते हुए 'बॉर्डर 2' की अनाउंसमेंट कर दी। एक्टर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से फिल्म की पहली झलक शेयर करते हुए लिखा है 'एक फौजी अपने 27 साल पुराने वादे को पूरा करने, आ रहा है फिर से। भारत की सबसे बड़ी वॉर फिल्म बॉर्डर 2।'

'बॉर्डर 2' के इस वीडियो में सनी देओल कह रहे हैं '27 साल पहले एक फौजी ने वादा किया था कि वो वापस आएगा। उसी वादे को पूरा करने, हिंदुस्तान की मिट्टी को अपना सलाम कहने आ रहा हूं फिर से।' इस वीडियो के बैकग्राउंड में 'संदेशे आते हैं' गाना भी बज रहा है। 'बॉर्डर 2' की पहली झलक के झलक के साथ ही सनी देओल ने यह भी बताया है कि इस फिल्म को भूषण कुमार, कृष्ण कुमार, जेपी दत्त और निधि दत्ता ने प्रोड्यूस किया है। साथ ही इसका डायरेक्टर अनुराग सिंह कर रहे हैं। सनी देओल की अपकमिंग फिल्म 'बॉर्डर 2' की पहली झलक देख फैंस की एक्साइटमेंट दोगुनी हो गई है। इस पोस्ट पर रिएक्ट करते हुए एक यूजर ने लिखा 'वाओ, इसका ओर इंतजार नहीं कर सकती।' दूसरे यूजर ने लिखा 'वाह, यह बहुत बड़ी अनाउंसमेंट है, सर जी।' एक और यूजर ने लिखा 'मैं बहुत ही खुश और एक्साइटेड हूं। क्योंकि, मेरा बचपन वापस लौट आया।' एक और यूजर ने सनी देओल के इस पोस्ट पर कमेंट करते हुए लिखा 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा, इसका और इंतजार नहीं कर सकता।'

रियल बॉक्स

कांस फिल्म फेस्टिवल में छाया भारत

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्म बनाने वाले देशों में दुनिया के दो पुरस्कारों का विशेष महत्व है। ये हैं 'ऑस्कर' और 'कांस फिल्म फेस्टिवल।' जिस भी देश की किसी फिल्म को इनमें से कोई अवॉर्ड मिलता है ,उसे अभूतपूर्व उपलब्धि माना जाता है। ऐसे में वे फिल्मकार भी दुनिया की आंख में आ जाते हैं जिनकी फिल्म पुरस्कृत होती है। भारत दुनिया में सर्वाधिक फ़िल्में बनाने वाले देशों में जरूर गिना जाता है, पर यहां ऐसी फ़िल्में बहुत कम बनती है, जो पुरस्कार पाने के योग्य हों। लेकिन, इस बार 'कांस फिल्म फेस्टिवल' में अनुसुईया सेनगुप्ता और पायल कपाड़िया ने भारत का नाम रोशन किया। बुल्गारिया के निर्देशक कॉन्स्टेंटिन बोजानोव की हिंदी भाषी फिल्म 'द शेमलेस' के लिए अनुसुईया सेनगुप्ता को फेस्टिवल में 'अनसर्टेन रिगार्ड' श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला। कोलकाता की अनुसुईया सेनगुप्ता इस श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय हैं।

देखा जाए तो इस साल का 'कांस फिल्म फेस्टिवल' भारत के लिए हर दृष्टि से उपलब्धियों से भरा रहा। इस फेस्टिवल में आठ भारतीय या भारत पर आधारित फिल्मों को स्पर्धाओं में जगह मिली। पायल कपाड़िया की फिल्म ऑल वी इमेजिन ऐज लाइट, एफटीआईआई के छात्र चिदानंद एस नाइक की 'सनफ्लावर वेयर द फर्स्ट वन्स टू नो' और 'द शेमलेस' की अनुसूईया सेनगुप्ता को अलग-अलग श्रेणी में सम्मानित किया गया। पायल कपाड़िया की फीचर फिल्म 'ऑल वी इमेजिन ऐज लाइट' पिछले तीन दशक में मुख्य स्पर्धा में दिखाई गई भारत की पहली और किसी भारतीय महिला निर्देशक की भी पहली फिल्म है। इससे पहले 1994 में मलयालम निर्देशक शाजी एन करुण की ग्रामीण परिवेश पर बनी फिल्म 'स्वाहम' भारत की ओर से 'द पाल्मे ड'ओर' के लिए नामांकित होने वाली आखिरी फिल्म थी। 1946 में भारतीय फिल्म ने 'द पाल्मे ड'ओर' जीता था। 'द पाल्मे ड'ओर' को पहले 'ग्रांप्री द इंटरनेशनल फेस्टिवल द फिल्म' के रूप में जाना जाता था, जीतने वाली एकमात्र भारतीय फिल्म चेतन आनंद की 'नीचा नगर' है। यह 1946 में जीता था। इसके अलावा मृणाल सेन के घरेलू कामगारों पर बने नाटक 'खारिज' को 1983 में ज्यूरी पुरस्कार मिला था। तभी इस पुरस्कार को लेते समय पायल कपाड़िया ने इतिहास को ध्यान में रखकर कहा कि कृपया और एक भारतीय फिल्म के लिए और 30 साल न इंतजार करें।

बुल्गारियन निर्देशक कॉन्स्टेंटिन बोजानोव की 'द शेमलेस' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली अनुसुईया सेनगुप्ता 'अनसर्टेन रिगार्ड' श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय बनीं। 'द शेमलेस' शोषण और उत्पीड़न की एक अंधेरी दुनिया बयां करती है, जिसमें दो यौनकर्मी एक बंधन में बंधती हैं और आजादी के लिए निकल पड़ती है। सेनगुप्ता ने यह पुरस्कार समलैंगिकों और अन्य कमजोर समुदायों को समर्पित किया। उन्होंने यह भी कहा कि जरूरी नहीं कि समानता के संघर्ष के लिए आपको समलैंगिक होने की जरूरत है। आपको गुलामी के बारे में जानने के लिए गुलाम बनकर देखना भी जरूरी नहीं है। हमें बस सभ्य इंसान बनने की जरूरत है।

'कांस फेस्टिवल' में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का खिताब पाने के बाद अनुसुईया सेनगुप्ता दुनियाभर में मशहूर हो गई। वे 'द शेमलेस' में अभिनय के लिए मिले इस अवॉर्ड की उपलब्धि से अभिभूत है। अपनी इस जीत को वे देश की जीत मानती है। 37 साल की अनुसुईया का कहना है कि समारोह में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार जीतना कोई व्यक्तिगत ट्रॉफी नहीं, पूरे देश को उनकी उपलब्धि पर गर्व है। उन्होंने कहा कि मुझे कुछ कहने का अधिकार नहीं है। लेकिन, फिर भी मैं इसे लेकर यही कहना चाहूंगी कि यह जीत पूरे देश की जीत है। इसके लिए तो पूरा देश गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

अनुसूईया ने एक इंटरव्यू में कहा कि मेरे पास अब भी अपनी इस कामयाबी को बयां करने के लिए सही शब्द नहीं है। मेरी खुशी के इस पल में हर कोई गर्व की भावना महसूस कर रहा है। यह एहसास मेरी सफलता को और भी बेहतर बनाता है। यह वास्तव में मेरे लिए कोई व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारा 15-20 लोगों का एक समूह था, शायद इससे भी कम। लेकिन, ऐसा लगा कि हम एक बड़ी भावना का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। क्योंकि, वह बड़ी भावना हमारे देश में है। मेरी खुशी में हर किसी को खुशी महसूस होती है। सेनगुप्ता है अपनी जीत से ज्यादा पायल कपाड़िया की जीत पर खुश हैं। उनका कहना है कि मैं जानती हूं, वे और उनकी पूरी टीम मेरे और मेरी टीम के बारे में भी ऐसा ही महसूस करती होंगी। बाकी दुनिया हमें जहां एक साथ, एक-दूसरे का समर्थन करते हुए, अच्छा काम करते हुए, पहचानती है तो मुझे और भी खुशी महसूस होती है।

फिल्म 'द शेमलेस' की कहानी दो महिलाओं के जीवन पर आधारित है। यह दिल्ली के वेश्यालय में काम कर रही रेणुका की कहानी है, जो एक रात एक पुलिसवाले का मर्डर करके फरार हो जाती है। रेणुका भागकर उत्तर भारत में वेश्याओं के एक जमघट में शरण लेती हैं, जहां उनकी मुलाकात देविका से होती है। देविका एक कम उम्र की युवती हैं, जो वेश्या का जीवन जीने को मजबूर हैं। रेणुका और देविका साथ मिलकर कानून और समाज से बचने के लिए एक खतरनाक रास्ते पर निकल पड़ती हैं। उनका मकसद है हमेशा के लिए आजादी पाना। एस नाइक की 'सनफ्लावर वेयर द फर्स्ट वंस टू नो' को ला सिनेफ (फिल्म स्कूल फिक्शन या एनिमेटेड फिल्में) श्रेणी में प्रथम पुरस्कार मिला। कन्नड़ लोककथा पर आधारित यह फिल्म एक बूढ़ी औरत पर आधारित है, जो मुर्गा चुरा लेती है। इसके बाद गांव में सूरज उगना बंद हो जाता है। इससे पहले कांस महोत्सव के लिए चुनी गई भारतीय फिल्मों में मृणाल सेन की 'खारिज' (1983), एमएस सथ्यू की 'गर्म हवा' (1974), सत्यजीत राय की 'पारस पत्थर' (1958), राज कपूर की 'आवारा' (1953) वी शांताराम की अमर भूपाली (1952) और चेतन आनंद की 'नीचा नगर' (1946) शामिल हैं।

मुंबई में जन्मी पायल कपाड़िया ने प्रारंभिक शिक्षा आंध्र प्रदेश से ली। इसके बाद उन्होंने मुंबई के सेंट जेवियर्स कॉलेज से इकोनॉमिक्स में ग्रेजुएशन किया। बाद में सोफिया कॉलेज से मास्टर्स की पढ़ाई की। इसके बाद वह फिल्म डायरेक्शन की पढ़ाई करने के लिए फिल्म एंड टेलीविज़न इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई) से जुड़ गईं। पायल की मां नलिनी मालिनी भारत की फर्स्ट जनरेशन वीडियो आर्टिस्ट हैं। पायल इससे पहले भी कान फिल्म फेस्टिवल में अवॉर्ड जीत चुकी हैं। उन्होंने 2021 में 'ए नाइट ऑफ नोइंग नथिंग' नाम की एक डॉक्यूमेंट्री डायरेक्ट की थी। इसे कान फिल्म फेस्ट में 2021 में द गोल्डन आई अवार्ड मिला था। यह अवार्ड फेस्टिवल की बेस्ट डॉक्यूमेंट्री को दिया जाता है। 'द पाल्मे ड'ओर' जीतने वाली पायल कपाड़िया ने 2014 में पहली फिल्म 'वाटरमेलन' और 'फिश एंड हाफ घोस्ट' बनाई थी। इसके बाद 2015 में 'आफ्टर क्लाउड' साल 2017 में 'द लास्ट मैंगो बिफोर द मानसून' बनाई। पायल ने 2018 में एक डॉक्यूमेंट्री 'एंड व्हाट द समर सेइंग' भी बनाई थी। पायल की फिल्म 'आल वी इमेजिन एज लाइट' का प्रीमियर 23 मई को जब फेस्टिवल दिखाई गई तो उसे काफी सराहा गया। यहां तक कि इसे 8 मिनट का स्टैंडिंग ओवेशन भी मिला था।

पायल कपाड़िया की फिल्म 'ऑल वी इमेजिन एस लाइट' केरल की दो नर्सों की कहानी पर आधारित है। फिल्म के अनुसार दोनों नर्सें मुंबई में रहती हैं। इस फिल्म में कानी कस्तूरी, दिव्या प्रभा और छाया कदम ने मुख्य भूमिकाएं निभाई हैं। यह हिंदी फीचर फिल्म है, जो दो नर्सों (प्रभा और अनु) की कहानी है, जो साथ रहती है। प्रभा अरेंज्ड मैरिज की है। उसका पति विदेश में रहता है। अनु प्रभा से छोटी हैं और उसकी शादी नहीं हुई। वह एक लड़के से प्यार करती हैं। प्रभा और अनु अपने दो दोस्तों के साथ एक ट्रिप पर जाती हैं। वहां उन्हें आज़ादी के मायने समझ आते हैं। यह फिल्म समाज में महिला होने का मतलब समझाती है। एक महिला का जीवन और उसकी आज़ादी जैसे मसलों पर बात करती है।

कांस फिल्म फेस्टिवल में 'द पाल्मे ड'ओर' का सर्वोच्च सम्मान, शॉन बेकर की सेक्स वर्कर स्करूबॉल कॉमेडी 'एनोरा' को मिला। पुरस्कार की घोषणा के बाद मंच पर पहुंचे बेकर ने ज्यूरी का धन्यवाद किया। बेकर ने कहा कि कांस का सर्वोत्तम पुरस्कार जीतना एक फिल्म निर्माता के रूप में पिछले 30 साल से मेरा सपना रहा है। 'कांस' में सर्वोच्च पुरस्कार 'द पाल्मे ड'ओर' अब तक किसी भी भारतीय फिल्म को नहीं मिला। दूसरे नंबर का सर्वोच्च पुरस्कार जरूर मिला। इसके अलावा मीरा नायर की 'सलाम बॉम्बे' ने 1988 कांस फिल्म फेस्टिवल में 'कैमरा ड' और' पुरस्कार जीता था। सितंबर 11 आतंकी हमलों से कुछ दिन पहले, नायर की 2001 की क्लासिक फिल्म 'मानसून वेडिंग' वेनिस फिल्म फेस्टिवल में गोल्डन लायन जीती थी। निर्देशक ऋतेश बत्रा की 2013 की प्रशंसित फिल्म 'द लंचबॉक्स' ने कांस में 'ग्रैंड गोल्डन रेल' पुरस्कार जीता।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फादर्स-डे विशेष

पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा !

अशोक जोशी

वर्ष में कुछ खास दिन कुछ खास रिश्तों के नाम समर्पित हैं। जून के तीसरे रविवार को 'फादर्स डे' के रूप में मनाया जाता है। हमारे देश में हाल के वर्षों में यह दिन मनाने का चलन बढ़ा है। संतान की

नजर में पिता हर मुश्किल को हल करने वाला एक ऐसा सक्षम व्यक्ति होता है, जिसे वह अपने मित्र, पालक, संरक्षक और आदर्श के रूप में देखता है। लेकिन, कई बार इस खूबसूरत रिश्ते में कड़वाहट भी नजर आती है। बॉलीवुड में पिता पुत्र के रिश्तों पर आधारित फिल्मों का सिक्का खूब चला और इस रिश्ते से जुड़े हर पहलू को खूब भुनाया गया।

हिंदी फिल्म जगत में पारिवारिक और सामाजिक फिल्में सदा से बनती और पसंद की जाती रही हैं। ऐसे में पिता सहित परिवार के तमाम सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है। बहुत सी फिल्मों में पुत्र को पिता की मौत का बदला लेते हुए दिखाया गया और कुछ फिल्में ऐसी भी बनीं जिनमें पिता पुत्र का रिश्ता एक नए रूप में सामने आया। इसलिए कि हमारे देश में रिश्तों को बहुत महत्व दिया जाता है। यह बात हमारी फिल्मों में भी झलकती है। 'मुगल-ए-आजम' में जहां अकबर और सलीम के रिश्तों की उहापोह दिखाई गई तो 'रुस्तम सोहराब' में भी लगभग वही मसाला था। वहीं फिल्म 'क्रिश' में एक पुत्र अपने वैज्ञानिक पिता और उसके अविष्कार को मानवता के खिलाफ उपयोग किए जाने से रोकता नजर आया।

आम जनजीवन में हम रिश्तों से बंधे रहते हैं और जब पर्दे पर हम रिश्तों की खींचतान देखते हैं तो हमें वह खुद पर गुजरता महसूस होता है। यही वजह है कि राजेश खन्ना अभिनीत अवतार और अमिताभ बच्चन अभिनीत 'बागबान' की कहानी को कई पिता अपनी कहानी समझते हैं। पिता पुत्र के रिश्तों पर बनी कुछ फिल्मों में विवाहेत्तर संबंधों और उससे उत्पन्न संतान के रिश्तों का ताना बाना बुना गया। शबाना आजमी और नसीरुद्दीन शाह की मासूम और शाहरुख खान की 'मैं हूं ना' इसका उदाहरण हैं। 'कभी खुशी कभी गम' पिता के अहंकार की वजह से परिवार का बिखराव बताती है तो 'आ अब लौट चलें' में बेटा परदेस में बसे पिता को अपनी मां के पास वापस ले आता है। इनमें मसाला है पर सब कुछ आसपास घटता प्रतीत होता है।

हिंदी फिल्मों में पिता के साथ पुत्री के संबंधों के बजाय पुत्र के साथ संबंधों को अधिक महत्व दिया गया है। शायद इसका कारण हमारा पुरुष प्रधान समाज है। सुनील दत्त की 'दर्द का रिश्ता' और 'शायद' ऐसी ही कुछ गिनी चुनी फिल्मों में पिता पुत्री के रिश्ते दिखाए गए हैं। पिता पुत्र पर बनी कुछ फिल्मों की कहानी गले नहीं उतरी। लेकिन, फिल्में खूब चलीं। लावारिस, शक्ति, परवरिश, त्रिशूल आदि में उस दौर के एंग्री यंग मैन अमिताभ बच्चन का जादू सर चढ़ कर बोलता था। लेकिन, फिल्मों में पिता पुत्र के रिश्तों में स्वाभाविकता नहीं नजर आई। अलबत्ता लगभग हर फिल्म में अमिताभ अपने बाप से नाराज ही दिखाई दिए। भरपूर मसाले के साथ भूतनाथ भी चल गई जिसमें पिता की आत्मा तक पुत्र से नफरत करती है।

बाप-बेटे के बीच तनाव पर बनी फिल्में भी काफी हद तक सराही गई। राज कपूर की 'आवारा' इस विषय पर मील का पत्थर थी जिसमें उनके पिता की भूमिका वास्तविक जिन्दगी में उनके ही पिता पृथ्वीराज कपूर ने निभाई। बाद में इसे पलट कर उनके बेटे रणधीर ने 'धरम करम' बनाई जिसमें राज कपूर ने उनके पिता की भूमिका निभाई। 'बॉबी' में भी बाप और बेटे में प्यार को लेकर तकरार का मसाला भरा गया था। इसमें प्राण ने ऋषि कपूर के पिता की भूमिका राज कपूर के अंदाज में निभाई। प्राण ने ऐसी ही एक भूमिका शराबी में अमिताभ के बाप बनकर निभाई थी।

'गांधी माई फादर' में महात्मा गांधी का उनके बेटे हरिलाल के साथ तनावपूर्ण रिश्ता जहां बहुत कुछ सोचने को मजबूर करता है वहीं 'काश' फिल्म में बीमार बेटे और पिता का दर्द भरा रिश्ता विषम परिस्थितियों में भी संतान के लिए मोह बताता है। 'कयामत से कयामत तक' में पिता बेटे की प्यार में दीवानगी से परेशान होता है। वहीं 'सूर्यवंशम' में अनपढ़ बेटे को पिता अपनी संपत्ति से बेदखल कर देता है। जबकि, 'काश' में अपने बीमार बेटे के लिए एक पिता अपना करियर और बीबी सब कुछ छोड़ देता है। महमूद की 'कुँवारा बाप' भी बाप बेटे के रिश्तों पर आधारित एक सफल फिल्म थी जिसमें महमूद और उनके पोलियो पीड़ित बेटे ने अपनी निजी जिंदगी को पेश किया था। बाप-बेटे के रिश्ते पर बनी हॉलीवुड की सफलतम फिल्म 'रॉकी-2' पर हमारे यहां बॉक्सर और दारा सिंह की 'रुस्तम' बनी। 'क्रेमर वर्सेस क्रेमर' पर देवानंद 'आनंद और आनंद' जैसी फिल्में बना चुके हैं। जबकि, 'बाप नम्बरी बेटा दस नम्बरी' जैसी फिल्मों की चर्चा ही बेमानी है।

'दंगल' का पिता कुश्ती में नकार दिए जाने के बाद अपनी बेटियों को अपनी खोई प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए उनकी सेहत के लिए हानिकारक बन जाने के बावजूद आखिर एक सफल पिता होने का दायित्व निभाता है। फिल्मों के कथानक ने ही नहीं गानों ने भी पिता के रिश्ते को लोकप्रियता प्रदान की। बाबुल की दुआएं लेती जा, मेरा नाम करेगा रोशन जग में मेरा राज दुलारा और 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा' ऐसे ही गीत हैं जो पिता की महिमा मंडित करते हैं। हिंदी फिल्मों की एक और खासियत हैं कि कालांतर में यहां कुछ कलाकार ऐसे हुए हैं जो पिता की भूमिका के लिए एकदम फिट बैठते थे। मनमोहन कृष्ण और नजीर हुसैन हमेशा टेसूएं बहाते हीरो-हीरोइन की माँ

के फोटो के आगे बस एक ही डायलॉग मारते दिखाई देते थे आज तेरी माँ जिन्दा होती।

नाना पलसीकर बीमार और गरीब बाप से आगे नहीं बढ़ सके, तो बेटे या बेटी पर सख्ती दिखाने वाले अकड़ू बाप की भूमिकाएं केएन सिंह, कमल कपूर और राज मेहरा के लिए आरक्षित थी। मजाकिया बाप की भूमिकाओं में डेविड और ओमप्रकाश खूब रंग भरते थे। भले ही हिन्दी फिल्मों में पिता की भूमिका पर बनी फिल्में खूब बनी और चली। लेकिन, एक बात आज तक खलती है कि हिंदी सिनेमा ने एक अदद 'मदर इंडिया' तो जरूर दी, लेकिन फादर इंडिया आज तक नहीं दे पाया। अलबत्ता 'मदर इंडिया' के निर्माता निर्देशक महबूब खान 'सन ऑफ इंडिया' बनाकर अपनी लूटिया जरूर डूबा ली।

योगी भी ना जाने... (आ) योग की माया !

प्रकाश पुरोहित

स्ट्रा टफोर्ड वार्विकशर लंदन... ये पता है महान लेखक विलियम्स शेक्सपियर का, जो कि सोलहवीं सदी में पैदा हुए थे और आज भी उनका, वही घर, वैसा ही है। घर ही नहीं, वह कस्बा भी जरा नहीं बदला है और वहां की सड़कें आज भी पत्थरों की हैं, रेस्त्रां और आसपास के घर भी। और तो और सड़कों की बत्तियां भी वैसी ही हैं और लगता है, जैसे अभी कोई सीढ़ी लेकर आएगा, चढ़ेगा और बत्ती सुलगा देगा। वहां पहुंच कर यह लगता है कि जैसे हम उनके ही युग में आ गए हैं। कौन कहता है कि वक्त लौट कर नहीं आता है, आता है, लाने की सोच और नजरिया होना चाहिए।

यही वजह है कि आज भी दुनिया भर से दस लाख से ज्यादा भक्त वहां पहुंचते हैं और उस महान लेखक को याद करते हैं, अपनी श्रद्धांजलि देते हैं। सरकार ने हर तरह की सुविधा दे रखी है। पूरा गांव ही जैसे साहित्यिक माहौल में रचा-बसा नजर आता है। कोई चित्र बना रहा होता है तो कोई चित्र उतार रहा होता है, तो कोई कविता लिख रहा होता है। लगता है, कला का गांव है और सभी कलाकार हैं। कोई यहां सुबह आकर शाम को वापस निकल जाता है तो ऐसे भी हैं, जो महीनों यहां रुकते हैं और जैसे यहां की खुशबू अपने अंदर लिए जाते हैं। इस सन्दर्भ को आखिर तक याद रखियेगा, काम आएगा।

एक कहानी याद आ रही है। वीरान टापू पर एक मछुआरे को एक व्यक्ति नजर आता है। वह शायद कहीं से बहता हुआ आ गया था। मछुआरा जब किनारे पर आया तो उसने और लोगों को भी बताया। फिर क्या था, जिसे देखो, वही चला जा रहा है और लौट कर अपने-अपने अनुभव सुना रहा है। किराए की बोट चलने लगी और मेले-ठेले जैसा माहौल हो गया। किनारे के शहर का शायद ही कोई बचा हो, जिसने उस अकेले आदमी को ना देखा हो। वह जिंदा रह सके, इसके लिए लोग खाने के पैकेट भी फेंक आते थे, कपड़े भी दे जाते थे, लेकिन किसी ने भी उससे ना तो बात की और ना ही किसी ने यह कोशिश ही की, कि उसे वहां से निकाल कर किनारे पर लाया जाए। ...और एक दिन वह व्यक्ति ठंड में अकड़ कर मर गया और लोगों ने अफसोस जताया,

है बेचारा ! बाद में उस टापू पर उसकी समाधि भी बना दी और हर बरस लोग जाने लगे। यह कहानी भी आज की हकीकत है, संभाल कर रखें !

ये दो बातें इसलिए याद आ रही हैं कि अभी-अभी निपटे लोकसभा चुनाव में जिस अयोध्या के दम पर भाजपा चार सौ पार के ख्वाब देख रही थी, वहीं भाजपा के भजिये बिक गए यानी भरोसे की भैंस ने पाड़ा जन दिया। मोदीजी के 'अयोध्या समारोह' से कुछ महीने पहले ही अयोध्या गया था। लखनऊ से अयोध्या जाते हुए जब धूल का गुबार दिखने लगा तो टैक्सी ड्राइवर से पूछ लिया था। उसने बताया था 'हम अयोध्या पहुंचने वाले हैं, करीब बीस किलोमीटर दूर है।' तो फिर ये धूल अभी से...? ''आप चल ही रहे हैं, देख लीजियेगा।''

शहर से पहले ही करीब दस किलोमीटर लम्बे रास्ते पर करीब सत्रह हजार मकान तोड़े गए थे, यानी उस राह का हर घर अपना असली चेहरा खो चुका था, क्योंकि सरकार का फरमान था कि मंदिर तक के रास्ते का हर घर एक जैसा होना चाहिए। सरकारी डिजाइन बना कर दी गई थी और उसके हिसाब से अपने खर्चे से घर का अगला हिस्सा डेकोरेट करना था। यहां सिर्फ घर ही नहीं, दुकानें भी थीं, जो टूट-फूट की वजह से या तो बंद थीं या फिर ठेले पर आ गई थीं। जो किरायेदार थे, उनकी तो और मुश्किल थी, रहें तो कैसे और रिपेयरिंग करवाएं तो कहां से ! मालिकों ने इस मौके का लाभ लिया और पुराने किरायेदारों को निकाल बाहर किया। कई परिवार अयोध्या छोड़ अपने गांव लौट गए या लखनऊ चले गए।

अयोध्या के दिन बदलने वाले थे, लेकिन उनका वर्तमान तो बुलडोजर के नीचे था। सरकारी काम धड़ल्ले से चल रहे थे, एयरपोर्ट की धूम थी और फ्लाय ओवर की धमक। चौराहे जगमग हो रहे थे, लेकिन अयोध्या वासियों की जिंदगी में अंधकार था। बाहर के लोग काम कर रहे थे और लोकल घर बैठने काबिल भी नहीं रहे। मंदिर के लिए पैसे की कमी नहीं थी और आम आदमी को हर दिन दो जून रोटी के लिए जूझना पड़ रहा था। कई परिवार ऐसे थे, जिनके बच्चे डेढ़-दो साल से ननिहाल या किसी और रिश्तेदार के यहां थे कि उनके घर तोड़ दिए गए थे। भव्य मंदिर बन रहा था, लेकिन आम आदमी अंदर ही अंदर टूट रहा था, घुट रहा था।

एयरपोर्ट और सड़क के लिए किसानों के खेत औने-पौने दाम पर... जबर्दस्ती खरीद लिए गए, जिनका विरोध रहा, उन्हें तो मुआवजा भी नहीं मिला।

ना जाने कितनी जिंदगियां और परिवार बर्बाद हो गए, ऐसे में यह उम्मीद गलत नहीं थी कि मौका आने पर सरकारी दल को जनता सबक सिखाएगी। फैजाबाद, अयोध्या का लोकसभा क्षेत्र है, अब यह तो कह नहीं सकते कि सिर्फ मुस्लिम वोट की वजह से भाजपा का श्याम-मुख हुआ है ! इतनी बड़ी जीत यह बताती है कि हर तबका नाराज था सरकार के फैसलों से।

क्या ठीक यही वाराणसी, काशी यानी बनारस में नहीं हुआ है, जहां प्रधान सेवक के चार लाख से ज्यादा वोट घट गए और हारते-हारते बचे? यहां के बाशिंदों में भी यही नाराजी रही कि हमारा मूल चरित्र ही नष्ट कर दिया। चमचमाते एयरपोर्ट और चौड़ी-चौड़ी सड़कें सरकार की छाती भले ही चौड़ी कर रही हों, मगर आम आदमी तो आज भी उन गलियों में ही घूमना और भटकना चाहता है, जो बनारस की पहचान रही हैं। जो बरसों बाद बनारस आ रहा है, पुरानी पहचान तलाशता लौट जाता है, उसे कुछ नहीं मिलता है। यह चकाचौंध तो उसके अपने शहर और महानगर में भी है। बरसों पुरानी गंध अब यहां नहीं मिलती और लगता है, जैसे रातोंरात कोई शहर डूब गया हो। ठीक है, कुछ खुश हो सकते हैं, लेकिन अपना घर कितना ही पुराना क्यों ना हो, सपने में तो वही नजर आता है।

दरअसल, हमारी ये सरकार अब सहेजने में दिलचस्पी नहीं लेती है, क्योंकि इसमें बड़ा बजट नहीं मिलता है। तोड़ कर नया बनाने में करोड़ों के व्यारे-न्यारे हो रहे हैं। क्या भारत को आज सिर्फ चौड़ी सड़कें और एयरपोर्ट और फ्लाय-ओवर ही चाहिए? जो हमारी विरासत है, पहचान है, उसे बचाये रखने की कोई जिम्मेदारी नहीं है? कुछ साल पहले पाकिस्तान के हिल स्टेशन मरी से लौटते हुए पास बैठे दोस्त ने टैक्सी ड्राइवर से कहा था-'यार, तुम्हारे यहां सड़कें बहुत अच्छी हैं, कितनी चौड़ी और बढ़िया !' इस पर उसका जवाब था- 'तानाशाह सबसे पहले सड़कें ही अच्छी बनवाता है, सिवाय सड़कों के यहां और कुछ नजर आ रहा है आपको?' उसने पलट कर जवाब दिया था। यह परवेज मुशर्रफ के दौर की बात है !

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

ठाकुर परिवार की स्त्रियाँ

ठाकुर परिवार उच्चारित किया जाये या कलकत्ता के जोड़ासांको की ठाकुरबाड़ी का ज़िक्र हो तो जाहिर सी बात है जेहन में एक ही नाम उभरता है विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर बचपन में जितने उपन्यास, कहानियाँ पढ़े उनमें से कुछ से मुलाकात होने का अवसर मिला तब मैं इतनी नियमितता से नहीं लिखती थी पर एक अजीब से जिज्ञासा ज़ेहन में रहती कि हमारे प्रिय लेखक कैसे रहते होंगे परिवार में कौन होगा या जैसा वो लिखते है वैसा ही दिखते है वगैरह वगैरह और यही कारण हुआ कि रवींद्र नाथ को (यहाँ मैं ठाकुर ही कहना चाहूँगी ब्रिटिश ने उन्हें टैगोर सरनेम दिया) जानने के बाद इच्छा हुई उनके परिवार की स्त्रियों के बारे में जानूँ। जिस तरह का आधुनिक रहन सहन, अंग्रेजी शिक्षा, टैगौर जैसे कवि लेखक, सभ्रांत परिवार की छवि जो लोगों को दूर से चौंधियाती। ऐसे में मेरे हाथ दो किताबें लगी एक काबेरी रायचौधरी की ''ठकुराइन सारदासुंदरी'' जिसका अनुवाद लिपिका साहा ने किया जो रवींद्र नाथ ठाकुर की माताश्री थी (दूसरी उनकी बहन पर रचित उपन्यास ''स्वर्णा'' जो राजगोपाल सिंह वर्मा ने लिखी कुछ उद्गार ''योगायोग'' जो टैगौर ने लिखी थी उससे लिये तीसरी किताब ''अलका सरावगी'' की ''गांधी और सरलादेवी चौधरानी'' मिली जो स्वर्णा जी की बेटी पर केंद्रित थी।)

सबसे पहले ''सारदा सुंदरी'' के बारे में और अंर्तमहल में रहने वाली स्त्रियों के बारे में चर्चा करें साभार लेखकों को जिनकी वजह से मुझे इतनी जानकारी मिली तो बात शुरू करनी होगी। ठकुराइन सारदा सुंदरी की सास दिगम्बरी और ससुर द्वारकानाथ से उस समय उनकी सास अर्थात् द्वारकानाथ की माँ ज़िंदा थी जब मात्र आठ वर्ष की सारदासुंदरी ने ठाकुरबाड़ी में प्रवेश किया था देवेंद्र नाथ से विवाह करके। लेखिका ने कुछ ऐसा वर्णन किया है मानों आंखों के आगे फिल्म चल रही हो। दिगबंरी बहुत संयमित, प्रभावशाली इतनी बुद्धिमता थी कि उनके पति द्वारकानाथ उनसे व्यवसाय की बातें कर लिया करते थे ना.................सलाह देना स्त्रियों के अधिकार में नहीं था (मैं पहले ही स्पष्ट कर दूँ मैं इतनी सक्षम नहीं कि पुस्तक की आलोचना करूँ या रिव्यू लिखूँ बस मैं इतना चाहती हूँ इतनी बुद्धिमान महिलायें जिन्होंने रवींद्र नाथ टैगोर के सानिंध्य में दिन बिताये उनका जीवन कैसा था। ''शाकू'' शाकम्भरी आठ बरस की उम्र में सारदा सुंदरी ठकुराइन बन गई विस्मृत हो गया अपना अतीत। बांगला ठाकुर परिवार की वधू बनने के बाद चौदह संतानों की जननी बनकर उसका जीवन वृत पूर्ण हुआ। एक अंधेरी कोठरी में बच्चा जनने के लिये उनका पंद्रह बार आना जाना हुआ जहाँ जाते उसे भय लगता था बच्चा जनने से नहीं कोठरी की दशा देख अर्थात् सुशिक्षित, सभ्रांत परिवार भी बाल विवाह, और रजस्वला होते ही उम्र का ख़्याल ना कर बच्चा जनने का विरोधी नहीं था यही कारण सारदासुंदरी काफ़ी बीमार भी रही, ख़ामोश अंर्तमुखी रही पति ने उन्हें जब भी बुलाया वो सहवास के लिये था जी हाँ पति पत्नी एक साथ नहीं रहते थे एक कमरे में उनके जीवन में प्रकाश तब ही कौंधता था जब पति बुलाते थे। चौदह बच्चों की माँ सारदा सुंदरी ने कभी बच्चों को नहीं खिलाया बड़े परिवार की प्रथा थी बच्चे नौकरों, आयाओं द्वारा पाले जाते थे। शुरूआती शिक्षा घर में अंग्रेजी और विभिन्न विषयों के लिये शिक्षक आते थे बड़े होने पर उन्हें स्कूल भेजा जाता था, जी नहीं फिर आप गलत समझे सिर्फलड़कों को। जिन लड़कियों की रूचि पढ़ने में रूचि थी वे सब प्रकार की पुस्तकें घर में बैठ अध्ययन करती थी। उनके पति बैंक के डायरेक्टर पद पे थे बैंक भी उनका ही था। उसने अपनी सास दिगम्बरी से इच्छा ज़ाहिर की उसे पढ़ना है पर शादी के दो साल बाद रजस्वला होते ही वंश आगे बढ़ाने के काम में लगी। सारदा सुंदरी मितभाषी थी। अभी तक उसे ये ही बताया गया था स्वामी की इच्छा में ही उसका सुख है। सास दिगम्बरी ग्रंथ पाठ करती और स्त्रियों के लिये स्वतंत्र विचार रखती। सारदासुंदरी की अंसतुष्टता इस प्रश्न से ज़ाहिर हुई जब उसने पूछा पति के किसी काम से उनके किसी व्यवहार से यदि दुःख मिले तो क्या चुपचाप सहना होगा, या सवाल कर सकती हूँ ज़ाहिर है इस सवाल का जवाब नहीं मिला वे अंदर ही अंदर घुलती थी जिस दिन पति उन्हें बुलाते वे सजा धजा कर भिन्न प्रकार के जूड़े बनाकर जाती और पंद्रह साल तक गोद भरती रही। इधर सास दिगंबरी को अपने पति द्वारकानाथ के चरित्र पर संदेह हुआ वे पूरे समय अंग्रेज मेमो के साथ, बजरे पर पार्टियों में बिताते, शराब पीते दिगबंरी सोते समय उनके ऊपर गंगााजल डाल आती। इधर देवेंद्र नाथ एक बार में एक ही वस्त्र इस्तेमाल करते और फिर नौकरचाकर बांट लेते। दिगंबरी ने सारदासुंदरी को कहा वैसे तुम प्रश्न पूछ सकती हो उसने पूछा अगर वे ना बदले तो, तो तुम बदल जाना पर अनाचार करके नहीं शास्त्रविधि का मानते हुये। दिगंबरी की मुस्कान गायब थी वो ध्यान में लग गई द्वारकानाथ बाहर चले गये उनकी माँ का निधन हो गया। देवेंद्रनाथ अपनी दादी के शोक में पागल से हो गये कारोबार में उनका ध्यान नहीं था। देवेंद्र नाथ की

राममोहन राय से मुलाकात हुई और उन्होंने उनकी राह पर जाना तय किया। पहली बार गर्भवती होने पर देवेंद्रनाथ ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। दासी आकर जब बताती है ससुर जी बागानबाड़ी में अय्याशी करतें हैं तो वो स्तब्ध रह जाती है। शाम होते ही सारदासुंदरी को रोना सा आता भीड़ में भी तनहा लगता सास दिगंबरी ऐसे हालात में उसे खुश रहने की सलाह देती है उसे बताती है बागानबाड़ी जा रही हूँ अफ़वाह है उनकी अय्याशियों की, जब तक आंखों से ना देख लूँ। सब अवाक् रह जाते है ठाकुर परिवार की घूंघट डाले स्त्रियाँ बाड़ी बागान जायेंगी। सारदासुंदरी सदा की भांति अपने प्रश्नों को समेट चुप रही। द्वारकानाथ शराब में मदमस्त मेमों की बीच घिरे हुये थे दिगंबरी को लगा वो मूर्छित हो जायेगी उनकी चचिया सास उन्हें बाहर ले आयी फिर भी कहा मैं सतीलक्ष्मी हूँ...........तो उन्हें लौटा लाऊँगी। घर आकर कमरे के द्वार बंद कर लिये। इधर देवेंद्रनाथ भी अनमने से थे। वो फूट फूट कर रो पड़ी अपनी सास के लिये।

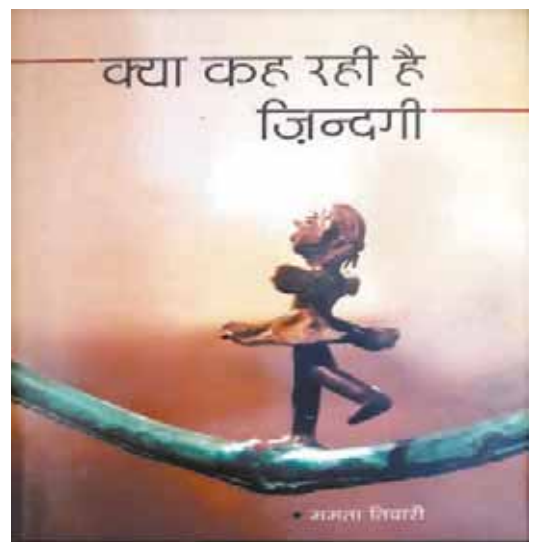

द्वारकानाथ घर आये, थाल सजा दिगंबरी उनके कमरे में गई उसमें पहले ''दिगंबरी'' ने शांत स्वर में कहा द्वारकानाथ से ''मैं अब पूजाकक्ष में अनाचार नहीं होने दूँगी। तुम म्लेच्छों के साथ उठते बैठते हो। हिंदुशास्त्र में लिखा है कि विधर्मी के संस्वर्श से शरीर अपवित्र हो जाता है। उन्होंने प्रधान पुरोहित को भी बुलाकर सब बताया। द्वारकानाथ दिगंबरी के तेज़ व्यक्तित्व से डरते थे। पुरोहित जी ने ऐसे पति से संपर्क रखना मना कर दिया सारदा डर से सहमी जा रही, पंद्रह बच्चों की माँ होने तक भी वो सहमी रही ऐसी थी रवींद्र नाथ टैगौर की माँ और दादी विरोधाभासी। देवेंद्र जब तक कमरे में रहते सारदा को कक्ष में जाने का अधिकार नहीं था हालांकि वे पति प्रेम में पागल थी। देवेंद्र को अपने होने वाले बच्चे के लिये स्ली भर स्नेह नहीं था। वहाँ द्वारकानाथ अपमानित महसूस कर रहे थे कि उनकी पत्नी ने औरत होकर पुरूष का परित्याग कर दिया। इधर सारदा की पहली संतान की मृत्यु हो गई। अंदर ही अंदर घुलते दिगंबरी चल बसी। द्वारकानाथ वास्तव में अपनी पत्नी की इज्ज़त करते थे। देवेंद्र ने पहली बार अपने कुछ विचार बतायें और अचानक देवेंद्र ने मतलब पूरा होते ही उसे धकेल दिया सारदा सुंदरी थोड़ा प्यार चाहती थी, पढ़ना चाहती थी, दिन भर शब्दकोष पढ़ती। देवेंद्र ने अपने सभी भाईयों को बुलाया और मूर्ति पूजा का विरोध कर, ब्रह्म समाजी होने का आग्रह किया दूसरी कोठी में इसकी सुविधा बनी जिसका नाम तत्वबोधिनी सभा रखा। गिरीश भूवंद्र उनके साथ हो लिये। सारदा की बड़ी इच्छा थी कि वो लिखना सीखे। द्वारकानाथ देवेंद्रनाथ से रूष्ट है। देवेंद्रनाथ ने ब्रह्मसमाज का स्थान इसलिये अलग चुना जब तक द्वारकानाथ है मूर्तिपूजा इसी घर में होगी। चौदह बरस की उम्र में सारदासुंदरी ने बेटे को जन्म दिया और देवेंद्रनाथ को उसे देखने का कोई चाव न हुआ या रिवाज़ नहीं था। सास के जाने के बाद सारी जिम्मेदारी सारदा पर आ गई, खाली समय में सारदा शब्दाकोष पढ़ती रहती। पुनः गर्भवती होने पर पति ने बुलावा भेजा ये जानकर कि वो गर्भवती है उसे वापस जाने के कह दिया, उसे उपेक्षित सा लगा क्या प्यार भरी बातें, चुंबन, वार्तालाप नहीं किया जा सकता। ससुर का सम्मान होता उन्हें विदेश जाने को मिल रहा है। सारदा का वजन बढ़ गया स्वास्थ्य खराब रहने लगा बच्चे पर बच्चे जनती रही। द्वारकानाथ पुनः विदेश जाने की तैयारी करते है और वसीयत लिख देते है। धीरे धीरे सारदा और देवेंद्र का मिलना कम हो गया। देवेंद्र ने अपने आपको ब्रह्मसमाज, तत्वबोधिनी सभा में डाल दिया और ब्राह्म धर्म की दीक्षा ले ली। द्वारकानाथ ने विलायत में मेम ढूंढ ली। सारदा ने अपने खूबसूरत देवर नगेन के लिये बेहद साधारण दिखने वाली त्रिपुरासुंदरी का चुनाव किया जो बेहद गलत साबित हुआ सुंदरता ठाकुर परिवार में बहुत मायने रखती थी नगेन के कहीं और संबंध हो गये। देवेंद्र ने अब महीना महीना भर मुलाकात करना बंद कर लिया जब देवेंद्र से सारदा ने कहा उसे बहुत अकेलापन लगता है तो देवेंद्र ने कहा अभी तो फिर बच्चा होने वाला है अब सारदा के अंदर बच्चा होने की बात से कोई उमंग नहीं जगती द्वारकानाथ का देहांत हो गया विदेश में। पत्नी की मृत्यु के बाद उसकी कमी को उन्होंने उसके जाने के बाद महसूस किया। योगमाया, त्रिपुरासुंदरी, सारदा सब मौन रहती है अपने पति को समझाना उनके बस में नहीं देवेंद्र को भाईयों से मुकदमा चला। सारदा को पता था कई जगह उसी के पति गलत थे पर वो किसी गिनती में नहीं आती। सारदा बच्चे जनती रही सारदा की खराब तबीयत देख उसकी चाची ने अब तुम्हारा शरीर बच्चा नहीं संभाल सकता तुम पति को मना कर देना बेचारी सारदा पति से मिलने का मौका नहीं गंवाना चाहती जैसे ही बुलावा आता दौड़ी चली जाती पूजा को लेकर सब स्त्रियाँ सारदा से दूर हो गयी क्योंकि देवेंद्रनाथ मूर्ति पूजा विरोधी थे। अब रवींद्रनाथ का जन्म हुआ दो पुत्रियों को विवाह हुआ सारदा ने बिस्तर पकड़ लिया। उसके पास खबर आती उसके देवरों ने पत्नियों का त्याग कर दूसरी औरतों से संबंध बना लिये पर सारदा बड़ी होकर भी कुछ नहीं कर पाती बस सांत्वना देती त्रिपुरा के पति के मरने के बाद देवेंद्रनाथ ने विधवा छोटी बहू पर मुकदमा ठोक दिया सारदा स्तब्ध रह गई। अब बहुयें आ रही थी सारदा बच्चे जन रही थी। नई प्रथा के तहत बहू को बेटा बंबई ले गया माँ का विरोध करके। दिमाग से अंसतुलित बेटा पागल हो गया उसकी बहू के प्रति भी सारदा अपराधी हो गई बहू समझ गई कि उसका पति पहले से पागल था। इधर रवि बुद्धि में चमत्कार दिखा रहा था। अचानक सारदा की बहुत तबीयत खराब होती है सारे बच्चे उसे घेर के बैठे है देवेंद्र नाथ को टेलीग्राम पर टेलीग्राम भेजे जा रहे है कैंसर निकला है सारदा पति की रट लगाती रही। सारदा गंगा तट पर बजरे पर ले जाई गई सारी उम्र अंतपुर में कैद सारदा खुली हवा में आई। हाँ एक सेकंड के लिये देवेंद्र आये सारदा ने उनको पूर्ण दृष्टि से देखा वो बहुत व्यस्त थे मरणासन्न पत्नी के लिये उनके पास वक्त नहीं था बच्चे झूठ बोलते रहे आप सो रही थी दादा आ के गये अभी। देवेंद्रनाथ को अंतिम सांस लेती पत्नी के पास आना पड़ा। बड़ा लड़का हेमेंद्र माँ के लिये इतना सोचता था अब समझ आया एक कमरे से सबका ख़्याल रखती मीठी आवाज़ से घर चलाने वाली पतिव्रता, संस्कारी, शांत बहू, माँ चुपचाप चली गई। ये द्वारकानाथ-दिगंबरी, देव्रेंदनाथ सारदा सुंदरी की पीढ़ी की बातें थे अगले भाग में सुनियेगा की पीढ़ी की स्त्रियों की आगे की बातें।

वैश्विक हुआ भारतीय नमस्ते

14 जून को जब पीएम ने मेलोनी से मुलाकात की तो भी काफी खूबसूरत नजारा देखने को मिला। पीएम नरेंद्र मोदी ने उन्हें हाथ जोड़कर नमस्ते किया और पीएम मेलोनी ने भी पारंपरिक भारतीय अंदाज में उनका स्वागत किया। दोनों प्रधानमंत्री के बीच किए गए इस शिष्टाचार 'नमस्ते' की भारत में जमकर तारीफ हो रही है और यूजर्स कह रहे हैं कि अभिवादन का विनम्र भारतीय तरीका वास्तव में अब वैश्विक हो गया है।

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में आज विश्व विख्यात लेखक ख़लील जिब्रान की दो लघु रचनाओं का अनुवाद।

प्रार्थना

हे ईश्वर ! मेरा कोई शत्रु नहीं है। यदि भविष्य में कोई मेरा शत्रु हो जाए तो उसे अच्छी तरह तैयार करना और मेरे जैसा ही उसे ताकतवर बनाना ताकि अंत में विजय सच्चाई की हो।

नकल

शरत ऋतु में मैंने अपने तमाम दुखों को समेटकर कर अपने बगीचे की जमीन में दबा दिया।

जब अप्रैल के महीने में वसन्त ने धरती को अपने आलिंगन में लिया तो इस बगीचे में दूसरे फूलों के साथ साथ कुछ अलग तरह के बहुत ही खूबसूरत फूल भी खिल गए।

और जब मेरे पड़ोसी की नज़र उन फूलों पर पड़ी तो वो मुझसे बोला , ÷अगली सर्दियों में बुवाई के समय इन फूलों के बीज हमें भी देना ताकि हम भी इनसे अपने बगीचो की सुंदरता बढ़ा सकें।÷

पूरे कुएं में भांग घुल रही है !

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

यूरोप की राजनीति राइट-विंग की तरफ बढ़ती जा रही है और ऐसा यूरोपीय चुनावों के नतीजे से पहले के सर्वे का अंदाजा है। फ्रांस, इटली, बेल्जियम, नीदरलैंड और ऑस्ट्रिया सहित कई देशों में राइट विंग कट्टर सोच नेताओं को साथ मिल रहा है। फ्रांस में नेशनल रैली की राजनीतिज्ञ और पूर्व नेता मरीन ले पेन लंबे समय से संस्थापक, पिता जीन-मैरी ले पेन से जुड़ी यहूदी विरोधी भावना और नस्लवाद को छोड़ कर पार्टी को आकर्षक बनाने की कोशिश कर रही हैं।

जर्मनी में बढ़ते चरमपंथ के संकेत सामने आने के बाद पिछले महीने उन्होंने पूर्व सहयोगी, दक्षिणपंथी अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी से नाता तोड़ लिया। उनकी रणनीति काम करती दिख रही है। फ्रांसीसी राजनीति के जानकारों ने इस संभावना पर बात करना शुरू कर दिया है कि 2027 में ले पेन फ्रांस की राष्ट्रपति बन सकती हैं।

यूरोपीय पापुलिस्ट पार्टियां बड़े पैमाने पर इमीग्रेशन और इस्लाम के असर का विरोध करती हैं और पेन-यूरोपीय सर्वसम्मति के किसी भी आदर्श पर स्थानीय और राष्ट्रीय को तवज्जो देती हैं। चौंकाने वाली बात है कि उनके विचार युवा वोटर के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं, जिनमें से कई लागत पर नाराज हैं और पहचान और लिंग पर 'प्रगतिशील' विचारों से निराश हैं। यदि हम यूरोप में अधिक दक्षिणपंथी राजनीति की कल्पना करते हैं तो इसका असर क्या होगा? यूक्रेन के लिए यूरोपीय साथ कम होने का खतरा है। हम पहले से ही देख रहे हैं कि कैसे विक्टर ओर्बन जैसे नेता आवाज उठा रहे हैं, सैन्य सहायता को रोकने की धमकी दे रहे हैं। दक्षिणपंथी विरोध मजबूत हो रहा है और पहले से ही यूरोपीय हरित समझौते को कमजोर कर दिया है, खासकर वनों की कटाई और खेती को लेकर। यूरोप भर में सभी दक्षिणपंथी दल प्रवासियों या शरण चाहने वालों को नहीं चाहते हैं, लेकिन उनके बीच जिम्मेदारी साझा करने पर गहराई से असहमत हैं।

अब यूरोप में बीच का रास्ता अपनाने वालों के सामने चुनौती यह है कि क्या नेतृत्व करते हुए चिंताओं को सुनने की कूव्वत दिखा सकते हैं, झुक सकते हैं लेकिन टूटने की नहीं। यूरोपीय संघ की सीमाओं पर ब्लादिमीर पुतिन के खतरे के साथ ऐसे दावं शायद ही कभी अधिक मुश्किल रहे हों। जैसा लग रहा है कि मुमकिन हो डोनल्ड ट्रंप फिर से कुर्सी पा जाएं। उस वक्त सभी दावं बेकार हो जाएंगे, क्योंकि कई मुखौटे उतर जाएंगे और कट्टर दक्षिणपंथी शायद अधिक बदसूरत चेहरा दिखाएंगे।